Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ

(सूरत अल् ईनाम : 49)

अनुवाद : और हम पैग़ंबर नहीं भेजते परन्तु इस हैसियत में कि वे खुशखबरी देने वाले और डराने वाले होते हैं। अतः जो ईमान ले आए और इस्लाह करे तो उन पर कोई भय नहीं और न वे कोई ग़म करेंगे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 19

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

10 शवाल 1443 हिज्री कमरी, 12 हिजरत 1401 हिज्री शम्सी, 12 मई 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

रमज़ान के छूटे हुए रोज़े

(1950) अबू सलमा से रिवायत है उन्होंने कहा : मैं ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से सुना, वे कहती थीं : रमज़ान के रोज़े मुझ पर वाजिब होते तो मैं उन्हें पूरा नहीं कर सकती परन्तु शाबान में। यहया ने कहा : नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की व्यस्तता की वजह से या यह कि वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में व्यस्त रहतीं।

अफ़तार का समय

(1954) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब रात इधर से आ जाए और दिन उधर से पीठ मोड़ कर चला जाए और सूरज डूब जाए तो रोज़ादार इफ़तार कर चुका।

अफ़तार में जल्दी करनी

(1957) हज़रत सहल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : लोग भलाई में रहेंगे जब तक कि वे इफ़तार में जल्दी करेंगे।

(सही बुख़ारी, भगक 3 किताब अल् सौम, मुद्रित 2008 क़ादियान)

ख़ुदा के समक्ष उसके भय से प्रभावित हो कर रोना नर्क को हराम कर देता है
इस बात को कभी अपने दिल से मिटने न दो कि ख़ुदा तआला के समक्ष इख़लास और सच्चाई की क़दर है
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

आँसू का एक क़तरा भी दोज़ख़ को हराम कर देता है

यदि अल्लाह तआला की प्रतिष्ठा और श्रेष्ठता और उस का भय का ग़लबा दिल पर हुआ और इस में एक रिक़्क़त और अनुरोध पैदा हो कर ख़ुदा के लिए एक क़तरा भी आँख से निकले, तो वह निसंदेह नर्क को हराम कर देता है। अतः इन्सान इस से धोखा न खाए कि मैं बहुत रोता हूँ। इस का फ़ायदा सिवाए इस के और कुछ नहीं कि आँख दुखने को आ जाएगी और इस प्रकार आँखों के रोग में पीड़ित हो जाएगा।

मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि ख़ुदा के हुज़ूर उसकी भय से प्रभावित हो कर रोना दोज़ख़ को हराम कर देता है लेकिन यह रोना और तड़प नसीब नहीं होता जब तक कि ख़ुदा को ख़ुदा और उसके रसूल को रसूल और उसकी सच्ची किताब पर इल्म न हो न केवल इल्म बल्कि ईमान।

चिकित्सक जैसे एक मरीज़ को जुलाब देता है और उसको हल्के हल्के दस्त आते हैं वह रोग को ज़ाए नहीं करते, जब तक कि जिगरी दस्त न आ जाए। वह अपने साथ समस्त मवाद व्यर्थ और गन्दगी को लेकर निकलते हैं और हर किस्म की दुर्गन्ध और ज़हरें जिन्हों ने मरीज़ को अंदर ही अंदर कमज़ोर और व्याकुल कर रखा था उनके साथ निकल जाते हैं तब उस को शिफ़ा होती है। इसी तरह पर दिल से रौना और तड़पना आस्ताना उलूहियत पर हर एक किस्म की नफ़सानी गंदगियों और मुफ़सद मवाद को लेकर निकल जाता है और इस को पाक और साफ़ बना देता है। अल्लाह वालों का एक आँसू जो تَوْبَةُ النَّصُوح के वक़्त निकलता है दुनियादार अरु लालच के बंदे और दिखावे और अंधकार के गिरफ़्तार के एक दरिया बहा देने से अफ़ज़ल और आला है, क्योंकि वह ख़ुदा के लिए है और यह ख़ल्क़ के लिए या अपने नफ़स के वास्ते।

इस बात को कभी अपने दिल से मिटने न दो कि ख़ुदा तआला के हुज़ूर इख़लास और सच्चाई की क़दर है। तकल्लुफ़ और बनावट उसके हुज़ूर कुछ काम नहीं दे सकते।

(मल् फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 371 मुद्रित 2018 क़ादियान)

वे जो बेटियों को बुरा समझते हैं उनका यह कार्य निहायत ही गंदा है
यदि बेटियां न होतीं तो वे किस तरह पैदा होते और यदि भविष्य में बेटियां न हों तो उनके बेटों की नसल किस तरह चले
वह कौन सी किताब है जिस में आरंभ ही से औरत के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त और देखभाल की गई हो
वह केवल और केवल क़ुरआन-ए-मजीद ही है

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरत नहल आयत : 60 يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ۚ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِي التُّرَابِ ۚ اَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ की तशरीह में फ़रमाते हैं :

अर्थात बावजूद पैतृक मुहब्बत के इस असमंजस में पड़ जाता है कि अपमान सहन करके लड़की को ज़िंदा रहने दे या उस बे-चारी को ज़िंदा दफ़ना दे।

इस बारे में यह बात याद रखनी चाहिए कि आम तौर पर लोगों को यह ग़लती लगी हुई है कि लड़कियों को ज़िंदा दफ़नाने का रिवाज अरबों में आम था लेकिन यह बात नहीं। यदि ऐसा होता तो फिर उनके मुल्क में लड़कियों की संख्या बहुत कम हो जानी चाहिए थी। असल बात यह है कि बे-शक लड़की की पैदाइश को तो अरब के सारे मुल्क में ही बुरा समझा जाता था परन्तु उनको ज़िंदा दफ़न करने का रिवाज वास्तव में केवल कुछ बड़े बड़े और घमंडी लोगों में था। लड़की की पैदाइश को बुरा समझना और बात है और उसे ज़िंदा दफ़ना देना और। आज तक लोग लड़की की पैदाइश को सामान्यतः बुरा समझते हैं اِلَّا مَا شَاءَ اللّٰه परन्तु उन्हें मारते कुछ ही लोग हैं। अरब में भी यह कार्य मक्का में बहुत ही कम होता था। आम तौर पर इन क़बायल में जो अपने आप को बहुत बड़ा समझते थे यह तरीक़ प्रचलित था और वह भी कुछ बड़े लोगों में। अतः इस जगह आम रस्म का वर्णन नहीं बल्कि क़ौम के बड़े लोगों के ऐसे फ़ेअल को वर्णन किया गया है जिस की नक़ल जबकि सारी क़ौम नहीं करती थी परन्तु उसे एक इज़्ज़त का कार्य सब समझते थे।

اَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ में बताया है कि वे जो बेटियों को बुरा समझते हैं उनका यह कार्य अत्यधिक गंदा है यदि बेटियां नहीं होतीं तो वे किस तरह पैदा होते और यदि भविष्य में बेटियां न हों तो उनके बेटों की नसल किस तरह चले।

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

"महान प्रतापी अल्लाह ने जो दरवाज़ा अपनी मख़लूक़ की भलाई के लिए खोला है वह एक ही है अर्थात दुआ, जब कोई व्यक्ति विलाप और पीढ़ा से इस दरवाज़ा में दाख़िल होता है, तो वह मौला करीम उसको पाकीज़गी और तहारत की चादर पहना देता है और अपनी अज़मत का ग़लबा उस पर इस क़दर कर देता है कि व्यर्थ के कामों से और बेकार की हरकतों से वह कोसों भाग जाता है" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

रमज़ानुल मुबारक में दुआ की एहमीयत तथा क़ुबूलियत-ए-दुआ के अवामिल और शर्तों पर विस्तारपूर्वक वर्णन

ख़ुश-क़िस्मत हैं हम में से वे जो इस रमज़ान को हमेशा अपनी क़बूलियत-ए-दुआ का माध्यम बना लें,
अल्लाह तआला के हक़ीक़ी अबद बनने वाले हों, अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल करने वाले हों, अपने ईमान को कामिल करने वाले हों

दुनिया के हालात के पेश-ए-नज़र दुआओं की तहरीक "अल्लाह तआला दुनिया को तबाह कारियों से बचाए और उनको अक़्ल दे कि ये अपने पैदा करने वाले ख़ुदा को पहचानने वाले हों"

बदरी सहाबा के बारे में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इरशाद फ़र्मूदा ख़ुतबात-ए-जुमअः पर आधारित ऐम. टी. ए. की तैयार की गई वेबसाइट www.313companions.org का संचालन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 8 अप्रैल 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَإِنِّيْ قَرِيْبٌ أُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ (अल् बकरः **:187**) इस आयत का अनुवाद है और जब मेरे बंदे तुझ से मेरे विषय में सवाल करें तो निसंदेह में क़रीब हूँ। मैं दुआ करने वाले की दुआ का उत्तर देता हूँ जब वे मुझे पुकारता है। अतः चाहिए कि वे भी मेरी बात पर लब्बैक कहें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वे हिदायत पा जाएँ।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से रमज़ान के महीने से हम गुज़र रहे हैं। यह महीना दुआओं की क़बूलीयत का महीना है। अल्लाह तआला ने इस महीने में विशेष रहमत से दुआओं को क़बूल करने का ऐलान फ़र्मा दिया है, अपने फ़ैज़-ए-ख़ास का चशमा जारी फ़र्मा दिया है क्योंकि इस में इन्सान अपना हर कार्य ख़ुदा तआला की रज़ा के हुसूल के लिए करता है। यहाँ तक कि खाना पीना भी अल्लाह तआला के हुक्म से और एक निर्धारित वक़्त में करता है। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जन्नत के दरवाज़े इस महीने में खोल दिए जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं। इस महीने में शैतान को जकड़ दिया जाता है। (सही मुस्लिम, किताब अल् सियाम, बाब फ़ज़ल शहर हदीस 2495)

अतः यह हमारा सौभाग्य है कि अल्लाह तआला ऐसे सामान हमारे लिए मुहय्या फ़र्मा देता है जिसमें हम अल्लाह तआला का क़ुरब पाने का सामान कर सकते हैं। यह हमारी बदक़िस्मती होगी कि ऐसे हालात अल्लाह तआला की तरफ़ से मयस्सर आने के बाद भी हम इस से फ़ैज़ न पा सकें। क्या दुनिया में रमज़ान के महीने में व्यभिचारी, डाकू, चोर, झूठे, फ़ाजिर अपने काम नहीं करते? करते हैं और निसंदेह करते हैं। यदि हर एक का शैतान जकड़ दिया जाए तो फिर वे ये शैतानी काम क्यों करें। यह नसीहत है मोमिनों को, उन लोगों को जो अल्लाह तआला का क़ुरब पाना चाहते हैं कि अल्लाह तआला ने रमज़ान के महीने में इसलिए कि तुम मेरे कहने से अपने आपको जायज़ काम से भी रोक रहे हो तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं तुम्हें ख़ुशख़बरी देता हूँ कि आम हालात में जो शैतान को खुली छुट्टी है जैसा कि उसने अल्लाह तआला से मोहलत मांगी थी कि दाएं बाएं आगे पीछे से इन्सान पर हमला करे और उसे वरग़ला कर अपने पीछे चलाए उसे आज मैंने उन लोगों के लिए जकड़ कर बांध दिया है या रमज़ान के महीने में उसे बांध दिया है और उन लोगों को मुकम्मल अपनी हिफ़ाज़त के हिसार में ले लिया है जो मेरी ख़ातिर रोज़ा रख रहे हैं, अपने खाने पीने को कम कर रहे हैं, अपनी रूहानियत में बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि माद्दी ख़ुराक को कम कर के रुहानी ख़ुराक में इज़ाफ़ा कर रहे हैं या कोशिश कर रहे हैं और यही रमज़ान की रूह है, रोज़े की रूह है। (उद्धरित मल् फ़ूज़ात, बहग 9 पृष्ठ 123)

अल्लाह तआला ऐसे लोगों के शैतान को मुकम्मल तौर पर जकड़ देता है और फिर अल्लाह तआला यह भी फ़रमाता है कि रोज़ेदार की जज़ा मैं ख़ुद हो जाता हूँ। (सही अल् बुख़ारी, किताब अल् तौहीद, बाब قول الله تعالیٰ یریدون ان یبدلوا کلام الله، हदीस 7492) कितनी बड़ी ख़ुशख़बरी है। अतः हमें इस से फ़ैज़ पाने की कोशिश करनी चाहिए और जन्नत के दरवाज़े जो अल्लाह तआला ने हमारे लिए खोले हैं उनमें हर दरवाज़े से दाख़िल होने की कोशिश करनी चाहिए। यह न हो कि हम अल्लाह तआला की इस बात के नीचे आने वाले बन जाएं जिसमें अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मुझे तुम्हारे भूखा प्यासा रहने से कोई दिलचस्पी नहीं है। यदि तुमने सुबह सेहरी खा ली और शाम को अफ़तारी खा ली और रात और दिन में जो नेकियां करने की तुमसे आशा की जाती थी वे न कीं तो यह भूखा प्यासा रहना, सारा दिन कुछ खाना पीना न करना न तुम्हें कोई फ़ायदा देगा न अल्लाह तआला को तुम्हारे इस भूखा प्यासा रहने से कोई उद्देश्य है। यह पैग़ाम हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से मिला।

(सही अल् बुख़ारी, किताब अल् सौम, बाब من لم یدع قول الزور والعمل به فی الصوم، हदीस 1903)

अतः हमें इस रूह को समझने और उसके मुताबिक़ अपनी ज़िंदगियों को गुज़ारने की ज़रूरत है जो रमज़ान का उद्देश्य है।

ये आयत जो मैंने तिलावत की है यह रमज़ान की फ़र्ज़ीयत और अहकामात और रोज़ों की एहमीयत के बारे में वर्णन की जाने वाली आयात के बीच में आने वाली आयत है और इस आयत में अल्लाह तआला दुआओं की क़बूलीयत के तरीक़ या किन लोगों की दुआ क़बूल होती है उनके बारे में वर्णन फ़र्मा रहा है। इन लोगों के बारे में वर्णन फ़र्मा रहा है जो इबादुर्रहमान हैं, इबादुर्रहमान बनना चाहते हैं, शैतान के चंगुल से निकलना चाहते हैं, अपनी दुआओं की क़बूलीयत के नज़्ज़ारे देखना चाहते हैं। अल्लाह तआला ने शुरू ही इस तरह फ़रमाया कि जब मेरे बंदे हे रसूल! तुझ से सवाल करें और पूछें कि हमारा ख़ुदा कहाँ है? एक आशिक़ की

शेष पृष्ठ 6पर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आयरलैण्ड की यात्रा, सितम्बर 2014 ई. (भाग-5)

डबलिन शहर की ओर यात्रा

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

इस लिए आज हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ख़ुतबा जुमा के साथ इस इलाक़े में बनने वाली "मस्जिद मर्यम" से ख़ुदा तआला की वहदानीयत का ऐलान ऐम. टी. ए के माध्यम सीधा सारे संसार को पहुंचा। अलहमदु लिल्लाह

प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ नमाज़-ए-जुमा की अदायगी के लिए होटल से रवाना हो कर एक बजे मस्जिद मर्यम पधारे और सबसे पहले मस्जिद की बाहरी दीवार में लगी हुई तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने मस्जिद में पधार कर ख़ुतबा जुमा इरशाद फ़रमाया।

तशह्हुद, ताव्वुज़ और सूरत फ़ातेहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सूरत अल् तौबा की आयत नंबर 18 की तिलावत फ़रमाई और इस का निमंलिखित अनुवाद वर्णन फ़रमाया

"अल्लाह की मस्जिदें तो वही आबाद करता है जो अल्लाह पर ईमान लाए और यौम आख़िरत पर और नमाज़ क़ायम करे और ज़कात दे और अल्लाह के सिवाए किसी से भय न खाए। अतः क़रीब है कि ये लोग सफ़लता की ओर ले जाए जाऐंगे"

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अलहमदो लिल्लाह आज हमें आयरलैंड में जमाअत अहमदिया मुस्लिमा की पहली मस्जिद में अल्लाह तआला जुमा पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़र्मा रहा है। अल्लाह तआला इस मस्जिद की बनने इसका क़ियाम प्रत्येक दृष्टि से बाबरकत फ़रमाए। जबकि यह छोटी सी मस्जिद है परन्तु इस बात का ऐलान है कि मसीह मुहम्मदी के मानने वाले यहां से ख़ुदा-ए वाहिद के एकेश्वरवाद का पाँच समय ऐलान करेंगे और इस में हाज़िर हो कर ख़ुदा-ए वाहिद की पाँच समय इबादत बजा लाएँगे। इस मस्जिद से इस आवाज़ को बुलंद करेंगे कि मस्जिदें तो अल्लाह तआला और उसके बंदों के हुक़ूक़ की अदायगी की जगह हैं न कि किसी फ़ित्ना और फ़साद की जगाह। ये मस्जिदें तो उस ख़ुदा की इबादत के लिए बनाई जाती हैं जो समस्त संसार का पालक है जिसने समस्त ज़मानों के इन्सानों के लिए अपनी रबूबियत का प्रकटन किया। जिसने भूतकाल में भी प्रत्येक क़ौम की भौतिकऔर रुहानी प्रगति के लिए अपनी रबूबियत का प्रकटन किया। आज भी अपनी रबूबियत से संसार को फ़ैज़याब कर रहा है और जो आइन्दा भी हमेशा नवाज़ता चला जाएगा फ़ैज़याब करता चला जाएगा। उसकी रबूबियत किसी विशेष क़ौम के लिए विशेष नहीं बल्कि समस्त जहानों और समस्त मख़लूक़ के लिए है। अतः इस दृष्टि से मसीह मुहम्मदी के मानने वालों की मस्जिदें इस बात का ऐलान करने के लिए हैं कि अल्लाह तआला की रुहानी रबूबियत की समझ प्राप्त करना है तो मसीह मुहम्मदी की जमाअत में शामिल होने वालों को ही यह हक़ीक़ी रंग में प्राप्त हो सकता है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : ये मस्जिदें इस बात का ऐलान करने के लिए हम बनाया करते हैं कि संसार के फसादों को दूर करने के लिए इस्लाम की इस सुन्दर शिक्षा पर ग़ौर करो जो मुहब्बत प्यार सुलह और अमन का संदेश देती है। ये मस्जिदें इस बात के ऐलान के लिए हैं कि संसार को मुहब्बत प्यार और भाई चारे की आवश्यकता है न कि जंग और जिदाल की न कि तलवार और तोप की। ये मस्जिदें जो हम बनाया करते हैं इस बात का ऐलान करती हैं कि इस मस्जिद में आने वाले का दिल हर किस्म के ज़ुल्मों और हुक़ूक़ ग़सब करने के विचारों से पाक है। हमारी ये मस्जिदें इस बात का निशान और केंद्र हैं कि यहां आने वाले दूसरों के हुक़ूक़ की अदायगी के लिए प्रत्येक किस्म की क़ुर्बानी करने हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : ये मस्जिदें जो हम बनाया करते हैं ये इस बात का ऐलान हैं कि धार्मिक आज़ादी का सबसे बड़ा अलमबरदार इस्लाम है और इसके प्रकटन के लिए हमारी मस्ज्दों के दरवाज़े प्रत्येक के लिए खुले हैं। प्रत्येक व्यक्ति जो एक ख़ुदा की इबादत करता है उसे मस्जिद में इबादत करने में कोई रोक नहीं। क़त-ए-नज़र इसके कि वह मुस्लमान है या ग़ैर मुस्लिम। हमारी मस्जिदें और इस में आने वाला प्रत्येक अहमदी इस बात का ऐलान करते हैं कि क़ुरआन की के अनुसार प्रत्येक हक़ीक़ी मुस्लमान पर समस्त धर्मों की इबादतगाहों की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी है और कर्तव्य है और इसके लिए उस ज़िम्मेदारी का अदा करना इतना ही ज़रूरी है जितना अपनी मस्जिद की हिफ़ाज़त करना। हमारी मस्जिदें हमें इस ओर भी ध्यान दिलाती हैं कि मोमिन के ईमान का हिस्सा मुल्क से वफ़ादारी भी है। एक मोमिन उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक वह अपने मुल्क और क़ौम का वफ़ादार न हो। उद्देश्य कि बेशुमार बातें हैं जो मस्जिदें से हक़ीक़ी रंग में जुड़े होने वालों से ये मांग करती हैं कि मस्जिदों का हक़ उस समय अदा होता है जब अल्लाह तआला और उसके बंदों के हुक़ूक़ सही रंग में अदा हों। और ये समस्त बातें क़ुरआन का आदेश हमें अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में दिया है और उन समस्त बातों के करने के लिए हमें हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बार-बार ध्यान दिलाया है और अपने अनुकरण और जीवनी से हुक़ूक़ अल्लाह और बन्दों के हक़ूक की अदायगी की है। इन्सानियत की क़द्रें क़ायम करने और मुहब्बत सलामती और अमन के क़ियाम के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने उदाहरण क़ायम किए। ये केवल कहने की बातें नहीं हैं बल्कि तारीख़ गवाह है कि एक अवसर पर आपने ईसाइयों को उनकी इबादत के समय अपनी मस्जिद, मस्जिद नब्वी में इबादत करने की आज्ञा दे दी और यही वह हक़ीक़ी इस्लामी शिक्षा है जिसको उस ज़माने में हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम सादिक़ और आशिक़ सादिक़ ने अपने ऊपर लागू करने का आदेश दिया। यही वह हक़ीक़ी इस्लामी शिक्षा और अमल है जिसकी कुछ मिसालें मैंने प्रस्तुत कीं। इन पर अनुकरण करने और उनको फैलाने का हमें आदेश दे कर और हम से उम्मीद कर के ज़माने के इमाम मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इस सोच के साथ जहां भी तुम मस्जिदें बनाओगे इस्लाम के परिचय और तब्लीग़ के नए रास्ते खोलते चले जाओगे। लोगों का इस्लाम की ओर ध्यान होगा। इस की सुन्दर शिक्षा उन्हें अपना प्रिय कर लेगी और इस प्रकार तुम्हारी संख्या भी बढ़ती चली जाएगी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अतः यही उद्देश्य है जिसके लिए हमें अपनी मस्जिदें बनानी चाहिऐं और हम बनाते हैं। यही वह शिक्षा है जिसको आज मीडिया के माध्यम से देखकर और इस का ज्ञान पा कर संसार हमारी ओर मुतवज्जा होती है। एक आम आदमी से लेकर बड़े बड़े लीडर और सियास्तदान जब देखते हैं कि एक ओर तो संप्रदायवादी गिरोह हैं जो मार-धाड़ और बिना भेद भाव क़तल-ओ-ग़ारत में लगे हुए हैं और दूसरी ओर एक जमाअत है जो मुहब्बत प्यार शांति और अमन के लिए प्रयास कर रही है। एक ओर तो ऐसे तथाकथित मुस्लमानों की मस्जिदें हैं जिनसे अल्लाह तआला और उसके रसूल के नाम पर ग़ालियां और ग़लाज़तों से भरे हुए भावनाओं के प्रकटन किए जाते हैं और दूसरी ओर केवल अमन और सुलह की बात की जाती है और "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" के नारे बुलंद किए जाते हैं। निश्चित तौर पर ये बातें अपनी ओर ध्यान खींचती हैं। लोगों को जिज्ञासा पैदा होती है कि इन दो किस्मों के मुस्लमानों में अंतर क्यों है? और फिर यह जिज्ञासा आजकल के जदीद मीडिया इंटरनैट इत्यादि के माध्यम से जमाअत अहमदिया के बारे में मालूमात प्राप्त करने के प्रयास की ओर मायल करती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : परसों डबलिन पार्लियामेंट में जाने का संयोगं हुआ। कुछ सदस्यों को पार्लियामेंट से मिलने का भी अवसर मिला। इन में से एक साहब कहने लगे कि जमाअत अहमदिया जिस तरह इन्सानियत की क़द्रें क़ायम करने के लिए और अमन की स्थापना के लिए प्रयास करती है वे दूसरे मुस्लमानों में नज़र नहीं आतीं और ये मालूमात जमाअत के बारे में बड़ी गहराई में जा कर मैंने ली हैं। और कहने लगे कि ये सब मालूमात लेकर मैं इस बात का इच्छुक हूँ कि अब जमाअत अहमदिया डबलिन में भी जल्द मस्जिद बनाए ताकि ये मुहब्बत और आला क़दरों का संदेश इस शहर में भी शेष पृष्ठ 10पर

हदीसों में विशेषता बुख़ारी और मुस्लिम में यह कहीं वज़ाहत नहीं मिलती कि सुन्नतों की चारों रकात में सूरत फ़ातेहा के साथ क़ुरआन का कुछ हिस्सा अवश्य पढ़ा जाए

जिस तरह फ़र्ज़ नमाज़ों की केवल पहली दो रकात में सूरः फ़ातेहा के बाद क़ुरआन-ए-करीम का कुछ हिस्सा पढ़ा जाता है इसी तरह सुन्नत नमाज़ों की भी

केवल पहली दो रकात में ही सूरत फ़ातेहा के बाद क़ुरआन-ए-करीम का कुछ हिस्सा पढ़ा जाएगा और तीसरी और चौथी रकात में केवल सूरत फ़ातेहा पर ही इकतिफ़ा किया जाएगा और यही मेरा मत है

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(क़िस्त10)

प्रश्न : एक दोस्त ने सुन्नत नमाज़ों की तीसरी और चौथी रकात में सूरत अल् फ़ातेहा के साथ क़ुरआन-ए-करीम का कुछ हिस्सा पढ़ने के बारे में मार्गदर्शन चाह। जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 14 मार्च 2019 में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : हदीसों में जिस तरह फ़र्ज़ नमाज़ों की पहली दो रकात में सूरः फ़ातेहा के बाद क़ुरआन-ए-करीम का कुछ हिस्सा पढ़ने के विषय में विवरण पाया जाता है। इस तरह हदीसों और विशेषता सही बुख़ारी और सही मुस्लिम में यह कहीं वज़ाहत नहीं मिलती कि सुन्नतों की चारों रकात में सूरत अल् फ़ातेहा के साथ क़ुरआन का कुछ हिस्सा ज़रूर पढ़ा जाए।

फ़ुक़हा का भी इस बारे में मतभेद है। इस लिए मालकी और हनबली मसलक वाले सुन्नतों की समस्त रकात में सूरः फ़ातेहा के साथ क़ुरआन-ए-करीम का कुछ हिस्सा पढ़ते हैं जबकि हनफ़ी और शाफ़ी तीसरी और चौथी रकात में सूरः फ़ातेहा के बाद क़ुरआन-ए-करीम का कोई हिस्सा नहीं पढ़ते।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला के निकट इस विषय में फ़र्ज़ और सुन्नत नमाज़ में कोई अंतर नहीं। जिस तरह फ़र्ज़ नमाज़ों की केवल पहली दो रकात में सूरः फ़ातेहा के बाद क़ुरआन-ए-करीम का कुछ हिस्सा पढ़ा जाता है इसी तरह सुन्नत नमाज़ों की भी केवल पहली दो रकात में ही सूरः फ़ातेहा के बाद क़ुरआन-ए-करीम का कुछ हिस्सा पढ़ा जाएगा और तीसरी और चौथी रकात में केवल सूरः फ़ातेहा पर ही संतुष्टि की जाएगा और यही मेरा मत है।

प्रश्न : एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत अक़्दस में हाल ही में किसी मुल्क में पत्थरों से मार-मार कर मार डालने की सज़ा के लागू करने का वर्णन कर के दरयाफ़त किया है कि क्या इस ज़माना में भी पत्थरों से मार-मार कर मार डालने की सज़ा का लागू किया जा सकता है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 14 मार्च 2019 में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : इस्लाम की तालीमात जिस में सज़ाएं भी शामिल हैं, किसी ज़माना या मुल्क के साथ विशेष नहीं बल्कि आलमगीर और दाइमी हैं। लेकिन इस्लामी सज़ाओं के बारे में यह बात हमेशा समक्ष रहनी चाहिए कि उनके साधारणता दो पहलू हैं एक इंतिहाई सज़ा और एक निसबतन कम सज़ा और उन सज़ाओं का बुनियादी उद्देश्य बुराई की रोक-थाम और दूसरों के लिए सबक का सम्मान करना है।

अतः यदि व्यभिचार फ़रीक़ैन की आपसी रजामंदी से हो और वे इस्लामी तरीक़ा-ए-शहादत के साथ साबित हो जाए तो फ़रीक़ैन को सौ कोड़ों की सज़ा का आदेश है। लेकिन जिस व्यभिचार में ज़बरदस्ती की जाए और उस में निहायत वहशियाना मज़ालिम की भावना पाई जाती हो। या कोई व्यभिचारी छोटे बच्चों को अपने ज़ुल्मों का निशाना बनाते हुए इस घिनौनी हरकत का मुर्तक़िब हुआ हो तो ऐसे व्यभिचारी की सज़ा केवल सौ कोड़े तो नहीं हो सकती। ऐसे व्यभिचारी को फिर क़ुरआन-ए-करीम की सूरत अल् मायदा आयत 34 और सूरत अल् अहज़ाब की आयत 61 से 63 में वर्णित शिक्षा की दृष्टि से क़तल और संगसारी जैसी इंतिहाई सज़ा भी दी जा सकती है। लेकिन इस सज़ा का निर्णय करने का अधिकार हुकूमत-ए-वक़्त को दिया गया है और इस तालीम के माध्यम से उमूमी तौर पर हुकूमत-ए-वक़्त के लिए एक रास्ता खोल दिया गया।

प्रश्न : एक दोस्त ने एक वक़्त में दी जाने वाली तीन तलाक़ों, ग़ुस्सा की हालत में दी जाने वाली तलाक़ और तलाक़ के लिए गवाही के मसायल के विषय में कुछ इस्तिफ़सार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 01 जून 2019 में इन प्रश्नों का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को पूरे होश-ओ-हवास से तलाक़ दे तो तलाक़ चाहे ज़बानी हो या तहरीरी, हर दो सूरत में प्रभावी होगी। जबकि एक नशिस्त में तीन बार दी जाने वाली तलाक़ केवल एक ही तलाक़ शुमार होती है। इस लिए पुस्तकों हदीसों में हज़रत रूकाना बिन अबद यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक़िया मिलता है कि उन्होंने अपनी पत्नी को एक वक़्त में तीन तलाक़ें दे दीं जिसका उन्हें बाद में अफ़सोस हुआ। जब मामला आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास पहुंचा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस तरह एक तलाक़ होती है यदि तुम चाहो तो रुजू कर सकते हो इस लिए उन्होंने अपनी तलाक़ से रुजू कर लिया और फिर उस पत्नी को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना ख़िलाफ़त में दूसरी और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना ख़िलाफ़त में तीसरी तलाक़ दी।

(सुंन अबी दाऊद, किताब अल् तलाक़, बाब फी الْبَتَّةِ)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में फ़रमाते हैं : "तलाक़ एक वक़्त में कामिल नहीं हो सकती। तलाक़ में तीन तुहर (माहवारी से पवित्रता) होने ज़रूरी हैं। फ़ुक़हा ने एक ही स्थान पर तीन तलाक़ दे देनी जायज़ रखी है परन्तु साथ ही इस में यह रियायत भी है कि इद्दत के बाद यदि पति रुजू करना चाहे तो वह महिला उसी पति से निकाह कर सकती है और दूसरे व्यक्ति से भी कर सकती है।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग पंजुम, पृष्ठ 17 प्रकाशन 2016 ई.)

इसी तरह जब कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को तलाक़ देता है तो उस की किसी नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त और फ़ुज़ूल हरकत पर नाराज़ हो कर यह क़दम उठाता है। पत्नी से ख़ुश हो कर तो कोई इन्सान अपनी पत्नी को तलाक़ नहीं देता। इसलिए ऐसे ग़ुस्सा की हालत में दी जाने वाली तलाक़ भी प्रभावी होगी। जबकि यदि कोई इन्सान ऐसे तैश में था कि इस पर जुनून की कैफ़ीयत तारी थी और उसने परिणामों पर ग़ौर किए बग़ैर जल्द-बाज़ी में अपनी पत्नी को तलाक़ दी और फिर उस जुनून की कैफ़ीयत के ख़त्म होने पर नादिम हुआ और उसे अपनी ग़लती का एहसास हुआ तो उसी किस्म की कैफ़ीयत के लिए क़ुरआन-ए-करीम ने फ़रमाया है कि لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ۔ (अल् बकरा : 226) अर्थात अल्लाह तुम्हारी कस्मों में (से) लग़ू (कस्मों) पर तुमसे पूछताछ नहीं करेगा। हाँ जो (गुनाह) तुम्हारे दलों ने (इरादे से) कमाया इस पर तुमसे पूछताछ करेगा और अल्लाह बहुत बख़शने वाला (और) बुर्दबार है।

जहां तक तलाक़ के लिए गवाही का मसला है तो यह इसलिए है कि झगड़े की सूरत में निर्णय करने में आसानी रहे। लेकिन यदि पति पत्नी तलाक़ के इजरा पर सहमत हों और उनमें कोई मतभेद न हो तो फिर गवाही के बग़ैर भी ऐसी तलाक़ प्रभावी शुमार होगी। अतः तलाक़ के लिए गवाही का होना मुस्तहब है लाज़िमी नहीं। इस लिए क़ुरआन-ए-करीम ने तलाक़ और रुजू के सिलसिला में जहां गवाही का वर्णन किया है वहां उसे नसीहत क़रार दिया है। जैसा कि फ़रमाया :

فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَىْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ۗ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۔ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا

(तलाक़ : 3) अर्थात फिर जब महिलाएं इद्दत की आख़िरी हद को पहुंच जाएं तो उन्हें मुनासिब तरीक़ पर रोक लो या उन्हें मुनासिब तरीक़ पर फ़ारिग़ कर दो। और अपने में से दो मुंसिफ़ गवाह निर्धारित करो। और ख़ुदा के लिए सच्ची गवाही दो। तुम

में से जो कोई अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाता है इस को यह नसीहत की जाती है और जो व्यक्ति अल्लाह का तक़्वा अख्तियार करेगा अल्लाह उसके लिए कोई न कोई रस्ता निकाल देगा।

इस लिए फ़ुक़हा अर्बा भी इस बात पर सहमत हैं कि यदि कोई व्यक्ति बग़ैर गवाहों के तलाक़ दे दे या रुजू कर ले तो उस की तलाक़ या रुजू पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

ज़ाईक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत-ए-अक़्दस में क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत के बाद "صَدَقَ اللّٰهُ الْعَظِيْم" के शब्द पढ़ने के बारे में अपनी राय का इज़हार कर के मार्गदर्शन चाहा, इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 11 जून 2019 में निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : मैंने इस बारे में तहक़ीक़ करवाई है। उल्मा में दोनों किस्म के नुक़्ता-ए-नज़र पाए जाते हैं। जो उस के जवाज़ के क़ायल हैं उन्होंने कुछ क़ुरआन की आयात और हदीसों से इस्तिदलाल करके उसके जवाज़ की राह निकाली है।

मेरे निकट भी यदि कोई तिलावत करने के बाद ये शब्दों पढ़ ले तो इस में कोई हर्ज की बात नहीं। क्योंकि इस में कोई बुराई तो बहरहाल नहीं बल्कि अल्लाह तआला के कलाम के सच्चा होने की तसदीक़ की जा रही है। लेकिन इन शब्दों का मतलब जाने बग़ैर केवल एक रस्म के तौर पर उन्हें दोहरा देना एक बेमानी फ़ेअल शुमार होगा।

प्रश्न : एक दोस्त ने यात्री के लिए रमज़ान के रोज़ों की रुख़स्त के बारे में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के कुछ इर्शादात हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत-ए-अक़्दस में पेश कर के उनकी बाहम ततबीक़ के विषय में मार्गदर्शन चाहा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 11 जून 2019 में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : आप के पत्र में वर्णन दोनों किस्म के इर्शादात में कोई मतभेद नहीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो दोनों ही का क़ुरआन-ए-करीम के स्पष्ट आदेश की रोशनी में यही इरशाद है कि यात्री और मरीज़ को रोज़ा नहीं रखना चाहिए। और यदि कोई व्यक्ति बीमारी में या सफ़र की हालत में रोज़ा रखता है तो वह ख़ुदा तआला के स्पष्ट आदेश की ना-फ़रमानी करता है।

जहां तक हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के इरशाद "रोज़े में सफ़र है। सफ़र में रोज़ा नहीं" का सम्बन्ध है तो यदि इस सारे ख़ुतबा को ग़ौर से पढ़ा जाए तो बात स्पष्ट हो जाती है कि हुज़ूर वास्तव इस में अलग मिसालें वर्णन फ़र्मा कर समझा रहे हैं कि ऐसा सफ़र जो बाक़ायदा तैयारी के साथ, सामान-ए-सफ़र बांध कर सफ़र की नीयत से किया जाए वह सफ़र ख़ाह छोटा ही क्यों न हो उस में शरीयत रोज़ा रखने से मना करती है। लेकिन ऐसा सफ़र जो सैर के उद्देश्य से किसी trip और enjoyment के लिए किया जाए, वह रोज़े के लिहाज़ से सफ़र शुमार नहीं होगा और इस में रोज़ा रखा जाएगा। इस लिए सफ़र में रोज़ा रखने के बारे में आपके अन्य इर्शादात भी आपके इसी दृष्टिकोण की ताईद करते हैं।

प्रश्न : एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में इस्तिफ़सार भिजवाया कि क्या लड़की अपने निकाह के अवसर पर ख़ुद ईजाब-ओ-क़बूल कर सकती है, तथा यह कि ऐलान निकाह के अवसर पर हक़ महर का वर्णन करना ज़रूरी है? हुज़ूर अनवर ने अपने पत्र तिथि 22 जुलाई 2019 में इस का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में जहां मुस्लमान मर्दों को मोमिन महिलाओं के साथ और मुस्लमान महिलाओं को मोमिन मर्दों के साथ निकाह करने का आदेश दिया है वहां अल्लाह तआला ने पुरुष और महिलाओं दोनों के लिए अलग अलग शब्दों इस्तिमाल किए हैं। इस लिए मर्दों के लिए फ़रमाया "وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكَاتِ" कि तुम मुशरिक महिलाओं से निकाह न करो और महिलाओं के लिए फ़रमाया "وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ" कि तुम (अपनी लड़कीयां) मुशरिक मर्दों से न ब्याहा करो।

गोया इस आयत में अल्लाह तआला ने महिलाओं के वलीयों पर उनके निकाह के आयोजित करने की ज़िम्मेदारी डाली है। इसी लिए ऐलान निकाह के अवसर पर लड़की की तरफ़ से इस का वली ईजाब-ओ-क़बूल करता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस अमर की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए फ़रमाते हैं :

"महिला स्वयं निकाह के तोड़ने की मजाज़ नहीं है जैसा कि वह ख़ुद बख़ुद निकाह करने की मजाज़ नहीं बल्कि हाकिम-ए-वक़्त के माध्यम से निकाह को तोड़ा जा सकता है जैसा कि वली के माध्यम से निकाह को करा सकती है।"

(आर्या धरम पृष्ठ 32 रुहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 37)

अतः ऐलान-ए-निकाह में ईजाब-ओ-क़बूल के वक़्त लड़की की तरफ़ से उस का वली यह ज़िम्मेदारी अदा करेगा और यही जमाअती रिवायत है।

जहां तक ऐलान-ए-निकाह में हक़ महर के वर्णन की बात है तो यह ज़रूरी नहीं, क्योंकि क़ुरआन-ए-करीम के अहकामात के अनुसार हक़ महर के चयन के बग़ैर भी निकाह हो सकता है जैसा कि फ़रमाया : لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمَسُّوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً وَمَتِّعُوهُنَّ عَلَى الْمُوسِعِ قَدَرُهُ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهُ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ (सूरत अल् बकर : 237) अर्थात तुम पर कोई गुनाह नहीं यदि तुम महिलाओं को उस वक़्त भी तलाक़ दे दो जबकि तुमने उनको छूआ तक न हो या महर न निर्धारित किया हो। और (चाहिए कि इस सूरत में) तुम उन्हें मुनासिब तौर पर कुछ सामान दे दो (ये अमर) दौलतमंद पर उस की ताक़त के अनुसार (लाज़िम है) और नादार पर उसकी ताक़त के अनुसार (हमने ऐसा करना) नेकोकारों पर वाजिब (कर) दिया है।

प्रश्न : हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल के साथ नैशनल मज्लिस-ए-आमला स्वीडन की virtual मुलाक़ात तिथि 29 अगस्त 2020 ई. में हुज़ूर अनवर ने इस मुलाक़ात से एक दिन क़बल इस्लाम मुख़ालिफ़ ग्रुप की तरफ़ से स्वीडन में क़ुरआन-ए-करीम के नुस्ख़ा को जलाने की मुज़म्मत, उस की वजह और इस पर एक अहमदी मुस्लमान की प्रतिक्रिया के बारे में मार्गदर्शन करते हुए फ़रमाया कि यहां तो सुना है कि कल रात झगड़े भी हुए हैं, इस का असर तो आप के शहर के क्षेत्र में नहीं है? आदरणीय अमीर साहिब स्वीडन के उत्तर पर कि रात को ये झगड़े हुए थे लेकिन अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हालात ठीक हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

अब यह जो इस्लाम के बारे में misconception है, इस को आपने ही दूर करना है। यह जो व्यक्ति खड़ा हुआ है कि मैं क़ुरआन जला दूंगा। और उसको ठीक है पुलिस ने नहीं आज्ञा दी लेकिन साथ ही उसे यह भी कह दिया कि उसे अपील का right है, वह अपील कर सकता है। और कुछ उस के जो followers थे या उसके ग्रुप के लोग थे, उन्होंने पार्क में जा कर कल रात को क़ुरआन-ए-करीम जला भी दिया। तो यह क्यों हो रहा है? इसलिए कि उन्हें पता ही नहीं है कि इस्लाम की तालीम क्या है, क़ुरआन-ए-करीम की तालीम क्या है। और इसलिए कि मुस्लमानों के जो दहश्तगर्द अमल हैं वे उनको यही बताते हैं कि हाँ यह शायद क़ुरआन में ही होगा। वे जो अन्य दूसरे आदेश हैं कि किन हालात में करो, उसका उन लोगों

शेष पृष्ठ 12 पर

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ02 का शेष

तरह बेचैन हो कर सवाल करें, अल्लाह तआला को पाने के लिए हर कोशिश करने का बेचैनी से इज़हार करें तो अल्लाह तआला फ़रमाता है उनसे कह दो घबराओ नहीं। मैं तुम्हारे क़रीब ही हूँ। अतः पहली बात या शर्त तो अल्लाह तआला ने अपने पाने के लिए अल्लाह तआला का बंदा बनने की लगा दी।

यदि इन्सान ख़ुदा तआला का बंदा बनने का हक़ अदा करने वाला बन जाए तो फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है मैं उस की पुकार भी सुनता हूँ, उस के शैतान को जकड़ देता हूँ। जब भी शैतान हमला-आवर हो में मदद के लिए आ जाता हूँ। केवल साल का एक महीना नहीं जो रमज़ान का महीना है बल्कि हमेशा ऐसे व्यक्ति को शैतान के हमले से बचाऊंगा इस शर्त पर कि मेरी बंदगी का हक़ अदा करो, मेरे हुक्मों को मुस्तक़िल मानो। केवल रमज़ान के महीने में ही नेकियां न बजा लाओ बल्कि हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूकुल-ईबाद अदा करो। क़ुरआन-ए-करीम की तालीम पर अमल करो, अपने ईमान को पुख़्ता करो। अल्लाह तआला फ़रमाता है मेरी समस्त सिफ़ात पर कामिल यक़ीन और ईमान रखो। फिर देखो किस तरह क़ुबूलियत-ए-दुआ के दृश्य भी तुम देखते हो और अपनी ज़िंदगियों को इस तरह ढालने वाले ही हक़ीक़ी सफ़लत और हिदायत पाने वाले हैं। अतः ख़ुश-क़िस्मत हैं हम में से वे जो इस रमज़ान को अपनी क़बूलीयत-ए-दुआ का हमेशा माध्यम बना लें।

अल्लाह तआला के हक़ीक़ी अबद बनने वाले हों। अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल करने वाले हों। अपने ईमान को कामिल करने वाले हों। हम ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हमें इस ज़माने के इमाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिक़-ए-सादिक़ मसीह मौऊद और मह्दी माहूद को मानने की अल्लाह तआला ने तौफ़ीक़ अता फ़रमाई है जिन्हों ने हमें अल्लाह तआला का क़ुरब पाने के रास्ते और दुआ की क़बूलीयत के रास्ते और दुआ का तरीक़ दिखाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक अवसर पर फ़रमाते हैं "महान प्रतापी अल्लाह ने जो दरवाज़ा अपनी मख़लूक़ की भलाई के लिए खोला है वह एक ही है अर्थात दुआ। जब कोई व्यक्ति विलाप और पीढ़ा से इस दरवाज़ा में दाख़िल होता है तो वह मौला-ए करीम उस को पाकीज़गी और तहारत की चादर पहना देता है और अपनी अज़मत का ग़लबा उस पर इस क़दर कर देता है कि बेजा कामों और नाकारा हरकतों से वे कोसों दूर भाग जाता है।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 5 पृष्ठ 438 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर इस बात की वज़ाहत करते हुए कि क़बूलीयत-ए-दुआ के लिए कैसी हालत पैदा करने की ज़रूरत है, क्या लवाज़मात हैं जो क़बूलीयत दुआ के लिए ज़रूरी हैं, अल्लाह तआला का अबद बनने के लिए ज़रूरी हैं आप फ़रमाते हैं कि "यह सच्ची बात है कि जो व्यक्ति आमाल से काम नहीं लेता वे दुआ नहीं करता बल्कि ख़ुदा तआला की आज़माईश करता है।

इसलिए दुआ करने से पहले अपनी समस्त ताक़तों को ख़र्च करना ज़रूरी है। और यही अर्थ इस दुआ " "اِھۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ" کے ھیں۔ के हैं। फ़रमाया पहले लाज़िम है कि इन्सान अपने एतिक़ाद, आमाल में नज़र करे। अपने एतिक़ाद पर, अपने आमाल पर नज़र करे क्योंकि ख़ुदा तआला की आदत है कि इस्लाह अस्बाब के पैराया में होती है। वह कोई न कोई ऐसा सबब उत्पन कर देता है कि जो इस्लाह का माध्यम हो जाता है। वे लोग इस मुक़ाम पर ज़रा ख़ास ग़ौर करें जो कहते हैं कि जब दुआ हुई तो अस्बाब की क्या ज़रूरत है। दुआ कर ली इसलिए अमल की ज़रूरत कोई नहीं, सामानों की ज़रूरत कोई नहीं, कोशिश की ज़रूरत कोई नहीं। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि वे नादान सोचें कि दुआ बजाए ख़ुद एक मख़फ़ी सबब है जो दूसरे अस्बाब को पैदा कर देता है (मल् फ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 124 ऐडीशन 1984 ई.) दुआ तो ख़ुद एक सबब है, छिपा हुआ सबब है, और दूसरे सबब को, अस्बाब को पैदा करने की वजह बनती है।

अतः क़बूलीयत दुआ के लिए, अल्लाह तआला का अबद बनने के लिए यह ज़रूरी है कि इन्सान कोशिश कर के अल्लाह तआला से एक तो इस का फ़ज़ल मांगे और फ़ज़ल यह है कि रौ और तड़प कर के उसके बंदों में शामिल हो और इस के लिए कोशिश करे। यह दुआ करे कि मुझे अपने बंदों में शामिल कर ले। उन बंदों में जो एतिक़ाद और आमाल के लिहाज़ से अल्लाह तआला के ख़ालिस बंदे हैं। वह दुआ करने से पहले अपने अमल को भी ख़ुदा तआला की रज़ा के मुताबिक़ ढालने की कोशिश करे और उन बंदों में शामिल हो जिनके ईमान डगमगाने वाले नहीं हैं और पक्के और मज़बूत हैं। वे इस बात पर यक़ीन रखते हैं कि अल्लाह तआला में यह ताक़त है कि वह मिट्टी के कण को भी सोना बना सकता है। वह यह ताक़त रखता है कि इंतिहाई बिगड़े हुओं को भी अपने इबाद में शामिल कर ले। उनको अपने रास्ते दिखाए और फिर वह ख़ुदा तआला की तरफ़ चलने वाले रास्तों पर चलने वाले बन जाएं। इस मज़मून को भी अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में बयान फ़रमाया है कि मेरे रास्ते पर चलने के लिए जिहाद करने वालों को में अपना रास्ता दिखाता हूँ। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है। وَالَّذِیۡنَ جَاھَدُوۡا فِیۡنَا لَنَھۡدِیَنَّھُمۡ سُبُلَنَا (अल् अन्कबूत : 70) अर्थात वे लोग जो हमसे मिलने की कोशिश करते हैं हम ज़रूर उनको अपने रास्ते दिखाते हैं। अतः यह रमज़ान का महीना खासतौर पर इस जिहाद का महीना है। इस में हमें भरपूर कोशिश करनी चाहिए, एक जिहाद करना चाहिए कि हम ख़ुदा तआला के उन बंदों में शामिल हो जाएं जो अल्लाह तआला के इबाद में शामिल हैं, उन लोगों में शामिल हो जाएं जिनके अल्लाह तआला क़रीब है। उन लोगों में शामिल हो जाएं जिनकी दुआएं अल्लाह तआला सुनता है। उन लोगों में शामिल हो जाएं जो अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलने वाले लोग हैं। उन लोगों में शामिल हो जाएं जिनको अल्लाह तआला की समस्त सिफ़ात पर पूर्ण ईमान और यक़ीन है। उन लोगों में शामिल हो जाएं जो हक़ीक़ी हिदायत याफताह हैं। उन लोगों में शामिल हो जाएं जिनका शैतान हमेशा के लिए जकड़ा जाता है लेकिन जैसा कि अल्लाह तआला के फ़रमान से ज़ाहिर है इसके लिए पहले हमें जिहाद की ज़रूरत है। अपनी हालतों को अल्लाह तआला की रज़ा के मुताबिक़ बनाने की ज़रूरत है। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुख़्तलिफ़ अवसरों पर हमारी राहनुमाई फ़रमाई, मुख़्तलिफ़ ज़ावियों से राहनुमाई फ़रमाई। इस लिए एक जगह आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "भला यह क्योंकर हो सके कि जो व्यक्ति निहायत लापरवाई से सुस्ती कर रहा है वह ऐसा ही ख़ुदा के फ़ैज़ से मुस्तफ़ीज़ हो जाए जैसे वे व्यक्ति कि जो समस्त अक़ल और समस्त ज़ोर और समस्त इख़लास से उस को ढूंढता है। इसी की तरफ़ एक दूसरे मुक़ाम में भी अल्लाह तआला ने इशारा फ़रमाया है और वह यह है وَالَّذِیۡنَ جَاھَدُوۡا فِیۡنَا لَنَھۡدِیَنَّھُمۡ سُبُلَنَا ی अर्थात जो लोग हमारी राह में कोशिश करते हैं हम उनको बिना ज़रूर अपनी राहें दिखला दिया करते हैं।" (बराहीन-ए-अहमदिया भाग 4, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 1 पृष्ठ 566-567 हाशिया नंबर 11)

अतः वाज़िह फ़र्मा दिया कि लापरवाई और सुस्ती दिखाने वाले के लिए मुम्किन नहीं कि ख़ुदा तआला उसको भी उन लोगों में शामिल कर ले जो अपनी समस्त ताक़तों और सलाहीयतों के साथ ख़ुदा तआला का क़ुरब पाने की कोशिश करते हैं, एक जिहाद करते हैं।

लोग प्रश्न करते हैं, पत्रों में मुझे लिख देते हैं कि हमने बहुत दुआ की है लेकिन अपने उद्देश्य में सफ़ल नहीं हो सके। अतः जो यह कहते हैं वह ग़लत है। अल्लाह तआला ग़लत नहीं। जिसको इन्सान अपनी तरफ़ से बहुत दुआ का मयार समझ रहा होता है हो सकता है अल्लाह तआला के नज़दीक इस में भी कमी हो और अभी उसे मज़ीद जिहाद की ज़रूरत हो। फिर अपने तरीक़-ए-दुआ को भी देखने की ज़रूरत है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यह फ़र्मा रहे हैं कि जो व्यक्ति अपनी समस्त अक़ल और समस्त ज़ोर और समस्त इख़लास के साथ उसे ढूंढ रहा है अल्लाह तआला फ़रमाता है हम उसे बिना ज़रूरत अपनी राहें दिखला दिया करते हैं। अतः हमें देखना होगा कि हमने अपनी अक़ल के अनुसार, अपनी तमाम-तर सलाहीयतों के मुताबिक़ अल्लाह तआला के इस हुक्म पर अमल कर लिया है कि فَلۡیَسۡتَجِیۡبُوۡا لِیۡ ک। कि मेरी बात पर लब्बैक कहें। अल्लाह तआला के हुक्मों पर मुकम्मल अमल करने की कोशिश कर रहे हैं। समस्त ज़ोर इस बात पर लगा दिया है कि अल्लाह तआला की हर बात पर लब्बैक कहना है। पूरे इख़लास-ओ-वफ़ा के साथ अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल कर रहे हैं। यदि नहीं तो फिर हमें शिकवा नहीं करना चाहिए कि अल्लाह तआला ने हमारी दुआओं को नहीं सुना। अतः दुआओं की क़बूलीयत के लिए भी पहले अपनी हालतों को बदल कर ख़ुदा तआला की तरफ़ क़दम बढ़ाना ज़रूरी है, जिहाद करना ज़रूरी है।

बंदे ने जिहाद की इंतिहा क्या करनी है। अल्लाह तआला तो अपने बंदे पर इतना मेहरबान है कि उसकी ज़रा सी कोशिश को ही वो उसका जिहाद समझ कर नवाज़ देता है। उसकी रहमानियत जो हर चीज़ पर हावी हो जाती है तो फिर बंदे का जिहाद भी आसान हो जाता है। इसको भी आसान कर देती है। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब बंदा मेरी तरफ़ एक क़दम चल कर आता है तो मैं दो क़दम चल के आता हूँ, उसकी तरफ़ बढ़ता हूँ। जब वह चल कर मेरी तरफ़ आ रहा होता है, तेज़ चल के आ रहा होता है तो मैं दौड़ कर उस की तरफ़ आता हूँ।

(सही मुस्लिम, किताब الذکر والدعاء...باب فضل الذکر والدعاء والتقرب

الی اللہ تعالیٰ हदीस 6833)

अतः ख़ुदा तआला तो हम पर इतना मेहरबान है लेकिन बात वही है कि इख़लास और वफ़ा शर्त है। यह नहीं कि रमज़ान में तो दावा करें कि हम नमाज़ें पढ़ेंगे, अल्लाह तआला के अहकामात पर अमल करेंगे, हुक़ूक़ अल्लाह भी अदा करेंगे और हुक़ूकुल ईबाद भी अदा करेंगे और रमज़ान में यह करते भी रहें लेकिन रमज़ान गुज़रने के बाद फिर ख़ुदा तआला को और इस के अहकामात को भूल जाएं।

दुनिया-दारी हम पर ग़ालिब हो जाए तो फिर ख़ुदा तआला पर यह शिकवा नहीं होना चाहिए कि ख़ुदा तआला तो यह कहता है कि मैं पुकारने वाले की पुकार सुनता हूँ और मैं ने तो रमज़ान में अल्लाह तआला को बहुत पुकारा है लेकिन मेरी दुआएं तो नहीं सुनी गईं।

हमेशा याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला से तो कोई चीज़ गुप्त नहीं है। उसे यह भी पता है कि इन्सान ने अपना अहद-ए-वफ़ा निभाने के पहले भी वादे किए और तोड़ दिए और अब यह केवल रमज़ान में ही नेकियों की तरफ़ तवज्जा कर रहा है तो फिर ऐसे लोगों से अल्लाह तआला जो चाहे वह सुलूक करता है लेकिन यह भी है कि कई दफ़ा ऐसे लोगों की भी कुछ दुआएं अल्लाह तआला क़बूल कर लेता है ताकि उन्हें पता चले कि अल्लाह तआला दुआओं को सुनता है और उनको अल्लाह तआला की तरफ़ ही हर वक़्त झुके रहना चाहिए। अतः अल्लाह तआला तो बंदे पर ज़ुलम नहीं करता। वह तो उसे हर वक़्त अपने प्यार की आग़ोश में लेने की कोशिश करता है। उसे तो अपने बंदे के अपनी तरफ़ आने और ख़ालिस हो कर उसकी बातें मानने की इस से ज़्यादा ख़ुशी होती है जितनी एक माँ को अपने गुमशुदा बच्चे के मिलने की ख़ुशी होती है या जिस तरह एक मुसाफ़िर को रेगिस्तान में अपने सामान से लदे हुए ऊंट के गुम जाने के बाद उसके मिलने से ख़ुशी होती है। अतः ये मिसालें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें दे दे के फ़रमाया कि अल्लाह तआला को तो इस तरह ख़ुशी होती है।(सही अल् बुख़ारी, किताब الادب،باب رحمۃ الولد... हदीस 5999 किताब الدعوات،باب التوبۃ, हदीस 6309)

अतः ये हम ही हैं जो ख़ुदा तआला के हक़ की अदायगी में कोताही करते हैं और फिर शिकवा भी करते हैं कि अल्लाह तआला ने हमारी दुआएं नहीं सुनी। अतः हमें इस लिहाज़ से अपने जायज़े लेने चाहिऐं। यह अह्द करना चाहिए कि हम इस रमज़ान को ख़ुदा तआला को पाने का ज़रीया बनाएंगे। उसके हुक्मों पर चलने की भरपूर कोशिश करेंगे।

जैसे भी हालात हम पर गुज़रें, जितना लंबा अरसा भी हमें जिहाद करना पड़े अल्लाह तआला के प्यार और क़ुरब को हासिल करने के लिए हम यह जिहाद करते चले जाऐंगे। अपने ईमानों को मज़बूत से मज़बूत तर करने की कोशिश करते चले जाऐंगे। यदि ऐसी हालत हम अपने पर तारी करने वाले बन जाएं तो क़ुबूलियत-ए-दुआ के मोजज़ात भी हम देखने वाले होंगे और ये बातें नहीं बल्कि यह मुक़ाम लोग हासिल करते रहे हैं और अब भी करते हैं। इस लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "इस आयत को नाज़िल हुए तेराह सौ बरस गुज़र गया है और कुछ संदेह नहीं कि तदनुसार मज़मून इस आयत के हर एक जो इस अरसा में मुजाहिदा करता रहा है वह वादा لَنَهْدِيَنَّهُمْ से बांटा हुआ हिस्सा लेता रहा है और अब भी लेता है और आइन्दा भी लेगा।" (अल् हक़ मुबाहेसा दिल्ली, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 4 पृष्ठ 192)

अतः हमें कोशिश करनी चाहिए कि अल्लाह तआला के इस फ़ैज़ को हिस्सा लेने वाले बनें और कभी अपना जिहाद जो अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए जिहाद है, जो अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलने का जिहाद है, जो क़ुरआन-ए-करीम के सात सौ या ज़्यादा हुक्मों पर चलने का जिहाद है, जो ईमान को कामिल करने का जिहाद है, जो अल्लाह तआला की सिफ़ात को हासिल करने का जिहाद है कभी उसे कम न होने दें। हमारा हर क़दम तरक़्क़ी की तरफ़ बढ़ने वाला क़दम हो और यह रमज़ान हमारे इस जिहाद का मील का पत्थर हो।

इस विषय के हवाले से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ और उद्धरण और हवाले भी पेश करता हूँ। यह ऐसा विषय है कि जिसको बार-बार सुनकर समझने की ज़रूरत है और यदि ये हमारी ज़िंदगीयों का हक़ीक़त में हिस्सा बन जाए तो एक इन्क़िलाब हम दुनिया में पैदा कर सकते हैं।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "जिस तरह हमारी दुनयावी ज़िंदगी में सरीह नज़र आता है कि हमारे हर एक कार्य के लिए एक ज़रूरी नतीजा है और वह नतीजा ख़ुदा तआला का फ़ेअल है। ऐसा ही दीन के विषय में भी यही क़ानून है जैसा कि ख़ुदा तआला इन दो मिसालों में साफ़ फ़रमाता है اَلَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अल् अन्कबूत :70) فَلَمَّا زَاغُوْا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ (अस्सफ़ : 6) अर्थात जो लोग इस फ़ेअल को बजा लाए कि उन्होंने ख़ुदा तआला की जुस्तजू में पूरी पूरी कोशिश की तो इस फ़ेअल के लिए लाज़िमी तौर पर हमारा यह फ़ेअल होगा कि हम उनको अपनी राह दिखावेंगे और जिन लोगों ने टेढ़ापन इख़तियार किया और सीधी राह पर चलना नहीं चाहा तो हमारा फ़ेअल उनकी निसबत यह होगा कि हम उनके दिलों को टेढ़ा कर देंगे

(इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 10 पृष्ठ 389)

अतः उस को एक और ज़ाविए से आप अलैहिस्सलाम ने पेश फ़र्मा दिया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है यदि हमारी राह को हासिल करने के लिए तुम जिहाद कर के हमारा फ़ैज़ पाते हो तो इस बात को भी याद रखो कि उसके मनफ़ी पहलू भी हैं कि मेरी राह पर नहीं चलोगे तो तुम्हारे दिल टेढ़े हो जाऐंगे। दुआओं का क़बूल होना तो एक तरफ़ रहा उसके नतीजा में, अल्लाह के रस्ते पर न चलने के नतीजे में तुम शैतान की गोद में गिर जाओगे और शैतान की गोद में गिरा हुआ इन्सान फिर अपनी दुनिया और आक़िबत दोनों ख़राब करने वाला बन जाता है। अतः इस इरशाद में जहां ख़ुशख़बरी है वहां अल्लाह तआला ने दूसरी जगह इंज़ार भी दे दिया है।

फिर एक और जगह आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाते हुए फ़रमाते हैं कि "इन्सान के दिल पर कई किस्म की हालतें वारिद होती रहती हैं। आख़िर ख़ुदा तआला सईद रूहों की कमज़ोरी को दूर करता है और पवित्रता और नेकी की क़ुव्वत बतौर मोहब्बत अता फ़रमाता है। फिर उस की नज़र में वे सब बातें नपसंदीदाह हो जाती हैं जो ख़ुदा तआला की नज़र में मकरूह हैं और वे सब राहें प्यारी हो जाती हैं जो ख़ुदा तआला को प्यारी हैं। तब उसको एक ऐसी ताक़त मिलती है जिसके बाद कमज़ोरी नहीं और एक ऐसा जोश अता होता है जिसके बाद सुस्ती नहीं। और ऐसी तक़्वा दी जाती है कि जिसके बाद मासियत नहीं। और रब-ए-करीम ऐसा राज़ी हो जाता है कि जिसके बाद ख़ता नहीं। परन्तु यह नेअमत देर के बाद अता होती है। अव्वल अव्वल इन्सान अपनी कमज़ोरियों से बहुत सी ठोकरें खाता है और नीचे की तरफ़ गिर जाता है परन्तु आख़िर उस को सादिक़ पा कर ताकत-ए-बाला खींच लेती है। "अर्थात अल्लाह तआला की ताक़त उसे अपनी तरफ़ खींचती है। "इस की तरफ़ इशारा है जो महान प्रतापी अल्लाह फ़रमाता है وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا, अरबी में ही आप हैं कि अर्थात نُثَبِّتُهُمْ عَلَى التَّقْوٰى وَالْاِيْمَانِ وَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَ الْمَحَبَّةِ وَالْعِرْفَانِ۔ وَسَنُيَسِّرُهُمْ لِفِعْلِ الْخَيْرَاتِ وَتَرْكِ الْعِصْيَانِ" (तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भाग 3 पृष्ठ 626) अर्थात हम उनको तक़्वा और ईमान पर साबित-क़दम कर देंगे और ज़रूर उन्हें मुहब्बत और मार्फ़त के रास्तों की हिदायत देंगे और उन्हें नेक-आमाल बजा लाने और मासियत को तर्क करने की तौफ़ीक़ देते रहेंगे।

जैसा कि मैंने कहा था हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا के हवाले से हमें मुख़्तलिफ़ पैराए में नसाएह फ़रमाई हैं और इलम और इर्फ़ान के दरवाज़े खोले हैं। इस हवाले में जो वर्णन हुआ है इन्सानी फ़ित्रत का नक़्शा खींच कर तफ़सील वर्णन फ़रमाया कि इन्सान एक हालत पर मुस्तक़िल क़ायम नहीं रह सकता। उतार चढ़ाव इन्सान की तबीयत में आता रहता है लेकिन जो सईद फ़ित्रत है वह अपनी कमज़ोरी की हालत से भी सबक़ हासिल करता है, तौबा और अस्तग़फ़ार करता है, अल्लाह तआला के आगे झुकता है और अपनी कमज़ोरी पर शर्मिंदा हो कर फिर अल्लाह तआला की तलाश में जिहाद के लिए खड़ा हो जाता है तो फिर अल्लाह तआला की मुहब्बत जोश में आती है, उसकी बख़शिश जोश में आती है और वह अपने बंदे की तरफ़ दौड़ कर आता है और उसे पाकीज़गी और नेकी की क़ुव्वत अता फ़रमाता है और जब इन्सान में अल्लाह तआला के फ़ज़ल से पाकीज़गी और नेकी की क़ुव्वत पैदा हो जाती है तो फिर उसका हर कार्य ख़ुदा तआला की रज़ा को हासिल करने वाला बन जाता है।

हर किस्म की कमज़ोरी और सुस्ती से वह पाक हो जाता है। वह तक़्वा पर चलने वाला बन जाता है और गुनाहों से बचाया जाता है। अल्लाह तआला की ऐसी रज़ा हासिल करने वाला ऐसा इन्सान बन जाता है कि फिर इस से ऐसी गलतीयां सरज़द ही नहीं होतीं जो ख़ुदा तआला को नाराज़ करने वाली हों। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया लेकिन याद रखो कि इस हालत को हासिल करने के लिए मुस्तक़िल मिज़ाजी से मेहनत करनी पड़ती है। आरिज़ी मेहनत नहीं मुस्तक़िल मेहनत की ज़रूरत है। और फिर यह नेकियां और दुआओं की क़बूलीयत के नज़्ज़ारे ज़िंदगी का हिस्सा बन जाते हैं।

फिर एक जगह आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जो हमारी राह में मुजाहिदा करेगा हम उस को अपनी राहें दिखला देंगे। फ़रमाया यह तो वादा है और और इधर

यह दुआ भी हमें सिखा दी कि اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ अतः इन्सान को चाहिए कि इस को मद्द-ए-नज़र रखकर नमाज़ में दर्द के साथ दुआ करे और तमन्ना रखे कि वे भी उन लोगों में से हो जाए जो तरक़्क़ी और बसीरत हासिल कर चुके हैं। ऐसा न हो कि इस जहान से बे बसीरत और अंधा उठाया जाए। (उद्धरित मल् फ़ूज़ात, भाग 1पृष्ठ 20 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः इस मुक़ाम को हासिल करने के लिए जहां अल्लाह तआला अपने बंदे को अपने रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है। यह दुआ भी ज़रूरी है और सूरत फ़ातेहा पढ़ते वक़्त बार-बार पढ़नी चाहिए कि اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ क़ादियान की किसी ने एक घटना वर्णन की हुई है कि किसी बुज़ुर्ग की नमाज़ पढ़ते हुए कैसी हालत होती थी। वह वर्णन करने वाले कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक सहाबी मस्जिद मुबारक के एक कोने में खड़े थे, नमाज़ पढ़ रहे थे। बड़ी ख़शीयत तारी थी, रिक़्क़त तारी थी और बड़ी देर तक हाथ बांध के खड़े हैं। कहते हैं मुझे तजस्सुस पैदा हुआ कि जा के देखूं क्योंकि हल्की हल्की आवाज़ भी आ रही थी कि क्या पढ़ रहे हैं। तो बार-बार वह اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ اور اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ को ही दोहराते चले जा रहे थे और रिक्क़त तारी हुई हुई थी। तो यह वह दुआ है जो इन्सान को अपनी हिदायत के लिए बहुत पढ़नी चाहिए।

फिर हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "ख़ुदा तआला का यह सच्चा वादा है कि जो व्यक्ति सिदक़-ए-दिल और नेक नीयती के साथ उसकी राह की तलाश करते हैं "वे उन पर हिदायत और मार्फ़त की राहें खोल देता है।" जैसा कि उसने ख़ुद फ़रमाया है وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا अर्थात जो लोग हम में से हो कर मुजाहिदा करते हैं हम उन पर अपनी राहें खोल देते हैं। हम में हो कर से यह मुराद है कि केवल इख़लास और नेक नीयती की बिना पर ख़ुदा जोई अपना उद्देश्य रखकर ये मुजाहिदा करते हैं कि ख़ुदा को ही हमने पाना है। कोई ख़ास दुनिया-दारी का उद्देश्य नहीं होता। असल चीज़ ख़ुदा का उद्देश्य है। इख़लास के साथ ख़ुदा को पाना उद्देश्य है फ़रमाया "लेकिन यदि कोई इस्तिहज़ा और ठट्ठे के तरीक़ पर आज़माईश करता है वह बदनसीब महरूम रह जाता है।" फ़रमाया "अतः इसी पाक उसूल की बिना पर यदि तुम सच्चे दिल से कोशिश करो और दुआ करते रहो तो वह दयालु और कृपालु है लेकिन यदि कोई अल्लाह तआला की पर्वा नहीं करता वह बेनयाज़ है।"(मल् फ़ूज़ात, भाग 6 पृष्ठ 439 ऐडीशन 1984 ई.) अर्थात अल्लाह तआला को भी तुम्हारी कोई पर्वा नहीं है।

फिर आप अलैहिस्सलाम हैं "जिस क़दर कारोबार दुनिया के हैं सब में अव्वल इन्सान को कुछ करना पड़ता है।" जो भी दुनिया के कारोबार हैं पहले इन्सान को कोशिश करनी पड़ती है दुनिया के कामों में भी तुम देख लो। यही मिसाल है दुनिया में। "जब वह हाथ पांव हिलाता है तो फिर अल्लाह तआला भी बरकत डाल देता है। इसी तरह पर ख़ुदा तआला की राह में वही लोग कमाल हासिल करते हैं जो मुजाहिदा करते हैं। इस लिए फ़रमाया है وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا अतः कोशिश करनी चाहिए क्योंकि मुजाहिदा ही कामयाबियों की राह है।" (मल् फ़ूज़ात, भाग 7 पृष्ठ 224 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः जब हम दुनियावी चीज़ों के हुसूल के लिए अपनी कोशिशों को चरम तक पहुंचाते हैं और उस के लिए कोशिश करते हैं तो फिर ख़ुदा तआला को पाने के लिए, पाने के रास्तों के लिए इंतिहाई कोशिश क्यों नहीं करते। क्यों यह समझते हैं कि ज़रा सा हमने मुँह से कहा और अल्लाह तआला हमें मिल जाएगा या हमारी दुआएं क़बूल कर लेगा। अतः यहां फिर वही बात आ गई कि जो लोग कहते हैं कि हमारी दुआएं क़बूल नहीं होतीं वे पहले अपने जायज़े लें। यह नहीं हो सकता है कि अल्लाह तआला को पाने के लिए आसानी हो और दुनियावी चीज़ों को हासिल करने के लिए मेहनत के उसूल को सामने रखा जाए। यह उसूल फिर हर जगह चलेगा।

हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक और जगह इस बात को वर्णन करते हुए कि अल्लाह तआला को पाने के लिए मेहनत की ज़रूरत है फ़रमाते हैं कि "जो लोग कोशिश करते हैं हमारी राह में मेहनत करने वाले राहनुमाई पर पहुंच जाते हैं। जिस तरह वह बीज बोने के बाद अत्यधिक कोशिश और आबपाशी के बे बरकत रहता बल्कि स्वयं भी फ़ना हो जाता है इसी तरह तुम भी इस इक़रार को हर-रोज़ याद न करोगे और दुआएं नहीं माँगोगे ख़ुदाया! हमारी मदद कर तो फ़ज़्ल-ए-इलाही वारिद नहीं होगा और बग़ैर इलाही सहायता के परिवर्तन असंभव है।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 7 पृष्ठ 225 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः ये कानून-ए-क़ुदरत है। अल्लाह तआला को पाने के लिए भी यह ज़रूरी है। जिस तरह दाना डाल कर एक ज़मींदार बैठा नहीं रहता इसी तरह यहां भी इन्सान को केवल यह ले के कि मैं ईमान ले आया, मैंने मान लिया, बैठ जाने से कुछ नहीं होगा बल्कि कोशिश करनी होगी। अपने ईमान के पौधों की निगहदाशत करनी होगी।

फिर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "जो व्यक्ति ख़ुदा तआला की तरफ़ रुजू करेगा तो अल्लाह तआला भी उसकी तरफ़ रुजू करेगा। हाँ यह ज़रूरी है कि जहां तक बस चल सके वह अपनी तरफ़ से कोताही न करे। फिर जब उसकी कोशिश उस के अपने इंतिहाई नुक़्ता पर पहुँचेगी तो वे ख़ुदा तआला के नूर को देख लेगा। وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا में फ़रमाया कि इस में "इस की तरफ़ इशारा है कि जो हक़ कोशिश का उस के ज़िम्मा है उसे बजा लाए यह न करे कि यदि पानी 20 हाथ नीचे खोदने से निकलता है तो वह केवल दो हाथ खोद कर हिम्मत हार दे।" बीस फट या तीस फिट खोदने से पानी निकलता है तो दो-चार फुट खोद के बैठ जाए कि पानी नहीं निकला। फ़रमाया कि "हर एक काम में कामयाबी की यही जड़ है कि हिम्मत न हारे।

फिर इस उम्मत के लिए तो अल्लाह तआला का वादा है कि यदि कोई पूरे तौर से दुआ और तज़किया नफ़्स से काम लेगा तो सब वादे क़ुरआन शरीफ़ के उसके साथ पूरे हो कर रहेंगे। "जो हिम्मत के साथ पूरे तौर पर दुआ और तज़किया नफ़्स से काम लेगा इसके साथ क़ुरआन शरीफ़ के सब वादे पूरे हो कर रहेंगे ।" हाँ जो ख़िलाफ़ करेगा वह महरूम रहेगा क्योंकि उस की ज़ात ग़ायूर है। उसने अपनी तरफ़ आने की राह ज़रूर रखी है लेकिन उस के दरवाज़े तंग बनाए हैं। पहुंचता वही है जो तल्ख़ियों का शर्बत पी लेवे।" मेहनत करनी पड़ती है।" लोग दुनिया की फ़िक्र में दर्द बर्दाश्त करते हैं।" फ़रमाया कि लोग दुनिया की फ़िक्र में दर्द बर्दाश्त करते हैं" यहाँ तक कि कुछ इसी में हलाक हो जाते हैं लेकिन अल्लाह तआला के लिए एक कांटे की दर्द भी बर्दाश्त करना पसंद नहीं करते। जब तक उस की तरफ़ से सिदक़ और सब्र और वफ़ादारी के आसार ज़ाहिर न हों" अर्थात जब बंदे की तरफ़ से सिदक़ और सब्र और वफ़ा-दारी के आसार ज़ाहिर न हों तो इधर से अल्लाह तआला की तरफ़ से भी रहमत के आसार नहीं होते" फ़रमाया कि "तो इधर से रहमत के आसार कैसे ज़ाहिर हों (मल् फ़ूज़ात, भाग 7 पृष्ठ 291 ऐडीशन 1984 ई.) गे फिर? अतः यह उन लोगों के प्रश्न का उत्तर है जो फिर वही बात कहते हैं कि हमने बहुत दुआ की और क़बूल नहीं हुई। मानो वे ख़ुदा तआला को पाबंद कर रहे हैं कि हम आएँगे भी ख़ुदा तआला के पास अपनी मर्ज़ी से और जब ज़रूरत होगी उस वक़्त आएँगे और ख़ुदा तआला नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हमारा पाबंद है कि हम जो कहें और जैसा चाहें वे हमारी दुआ क़बूल कर ले लेकिन यह बात तो वह दुनिया के क़ानून और ताल्लुक़ात में भी देखते हैं जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐसा नहीं होता फिर ख़ुदा तआला के विषय में यह तवक़्क़ो क्यों है कि जिस तरह हम चाहें वह हो जाये और बग़ैर मेहनत के हो जाए। अतः यहां यही फ़रमाया कि ख़ालिस हो कर अल्लाह तआला की तरफ़ आओ तो फिर देखो उसके प्यार के नज़्ज़ारे।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "याद रखना चाहिए कि ईमान बग़ैर आमाल के ऐसा है जैसे कोई बाग़ बग़ैर चश्में के।" नहरों के बग़ैर, पानी के बग़ैर कोई बाग़ हो। "जो दरख़्त लगाया जाता है यदि मालिक उसकी आबपाशी की तरफ़ तवज्जा न करे तो एक दिन ख़ुशक हो जाएगा। इसी तरह ईमान का हाल है। وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا अर्थात तुम हल्के हल्के काम पर न रहो बल्कि इस राह में बड़े बड़े मुजाहिदात की ज़रूरत है। नफ़्स को बैल से मुशाबहत दी गई है।"

(तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, भाग 3 पृष्ठ 631)

अतः अल्लाह तआला जो फ़रमाता है وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ कि मुझे पुकारने वाले मुझ पर ईमान लाएं तो ईमान यह है कि अल्लाह के हक़ूक और अल्लाह के बन्दों के हक़ूक की अदायगी से अल्लाह तआला पर ईमान का हक़ अदा करें। अल्लाह तआला ईमान के बाग़ की परवरिश और निगहदाशत करने का अपने बंदों को फ़रमाता है। हम अपने घरों में भी देखते हैं कि पौधों को भी यदि हम बाक़ायदगी से न देखें, उनका ख़्याल न रखें तो वे सूखने लग जाते हैं। फिर ईमान के बाग़ को किस तरह हम बग़ैर निगहदाशत के छोड़ सकते हैं। फिर एक और ज़ाविए से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बात को बयान फ़र्मा रहे हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि "हमारे राह के मुजाहिद रास्ता पावेंगे। इसके अर्थ ये हैं कि इस राह में पैग़म्बर के साथ मिलकर जद्द-ओ-जहद करना होगा। एक दो घंटा के बाद भाग जाना मुजाहिद का काम नहीं बल्कि जान देने के लिए तैयार रहना उस का काम है। अतः मुत्तक़ी की

निशानी इस्तिक़ामत है।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 25 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः हमने जब अपने अह्द बैअत में यह अह्द किया है कि हम दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखेंगे तो फिर उस अह्द पर क़ायम रहने के लिए इस बात की ज़रूरत है कि हम ये देखें कि दीन हम से क्या चाहता है जिसको हमने मुक़द्दम रखना है और फिर इस पर मुस्तक़िल मिज़ाजी से क़ायम भी रहना है।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "जो व्यक्ति केवल अल्लाह तआला से डर कर उसकी राह की तलाश में कोशिश करता है और इस से इस अमर की गिरह-कुशाई के लिए दुआएं करता है तो अल्लाह तआला अपने क़ानून के मुवाफ़िक़ وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (यानी कोशिश करते हैं हम अपनी राहें उनको दिखा देते हैं) ख़ुद हाथ पकड़ कर राह दिखा देता है और उसे इत्मीनान-ए-क़लब अता करता है और यदि ख़ुद दिल में अँधेरा ही अँधेरा हो और ज़बान दुआ से बोझल हो और एतिक़ाद शिर्क और बिद्दत से ग्रस्त हो।" एतिक़ाद शिर्क और बिद्दत से मुलव्वस हो तो वह दुआ ही क्या है और वह माँगना ही किया है जिस पर अच्छे परिणाम प्रकट न हों।" (तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, भाग 3 पृष्ठ 632)

अतः हमें अपने जायज़े लेते रहना चाहिए कि क्या हम इस सोच के साथ अल्लाह तआला की राहों की तलाश कर रहे हैं और हमारे दिल ग़ैरुल्लाह से बिल्कुल ख़ाली हो चुके हैं?

फिर तौबा और इस्तिग़फ़ार की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए आप अलैहिस्सलाम हैं कि "तौबा इस्तिग़फ़ार अल्लाह से मिलने का का माध्यम है। अल्लाह तआला फ़रमाता है। وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۔ पूरी कोशिश से उसकी राह में लगे रहो मंज़िल-ए-मक़्सूद तक पहुंच जाओगे। अल्लाह तआला को किसी से द्वेष नहीं।" (मल् फ़ूज़ात, भाग 10 पृष्ठ 107)

फ़रमाया कि "क़ुरआन शरीफ़ शिक्षा के अनुसार हमें यह अमर यूं मालूम होता है कि एक तरफ़ तो अल्लाह तआला क़ुरआन शरीफ़ में अपने करम, रहम, लुतफ़ और मेहरबानियों की सिफ़ात वर्णन करता है और रहमान होना ज़ाहिर करता है और दूसरी तरफ़ फ़रमाता है कि اَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى (अल् नजम : 40) और وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا फ़र्मा कर अपने फ़ैज़ को प्रयास और मुजाहिदा में मुनहसिर फ़रमाता है तथा इस में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा का तर्ज़-ए-अमल हमारे वास्ते एक मार्गदर्शन और उचित उदाहरण है। सहाबा की ज़िंदगी में ग़ौर कर के देखो भला उन्होंने केवल मामूली नमाज़ों से ही वे स्थान हासिल कर लिए थे? नहीं बल्कि उन्होंने तो ख़ुदा तआला की रज़ा के प्राप्त करने के वास्ते अपनी जानों तक की पर्वा नहीं की और भेड़ बकरियों की तरह ख़ुदा तआला की राह में क़ुर्बान हो गए जब जा कर कहीं उनको यह रुत्बा हासिल हुआ था। "फ़रमाते हैं कि" अक्सर लोग हमने ऐसे देखे हैं वे यही चाहते हैं कि एक फूंक मार कर उनको वे दर्जात दिला दीए जाएं और अर्श तक उनकी रसाई हो जाए।" (मल् फ़ूज़ात, भाग 10 पृष्ठ 205 ऐडीशन 1984 ई.) यह नहीं हो सकता।

अतः बेशक अल्लाह तआला रहीम और करीम भी है लेकिन साथ ही उसने पूर्ण ईमान बनने वाले लोगों के लिए यह शर्त भी लगाई है कि वे उस की राह में जिहाद करने वाले हों। फिर अल्लाह तआला उनके मुक़ाम ऊंचे करता चला जाता है। क़बूलीयत-ए-दुआ के भी वे नज़्ज़ारे देखते हैं और अल्लाह तआला की रहमानियत और रहीमीयत के भी पहले से बढ़कर नज़्ज़ारे देखते हैं जो सहाबा ने देखे और ख़ुदा तआला की मुहब्बत में वे लोग ऐसे डूबे जिसकी मिसाल नहीं। यदि अल्लाह तआला की राह में मारे भी गए तो फिर वह जन्नतों और अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ुशख़बरी पाने वाले भी बन गए।

फिर आप अलैहिस्सलाम हैं "जो लोग ख़ुदा में हो कर ख़ुदा के पाने के वास्ते तड़प और पीढा से कोशिश करते हैं उनकी मेहनत और कोशिश ज़ाए नहीं जाती और ज़रूर उनकी राहबरी और हिदायत की जाती है। जो कोई सिदक़ और ख़ुलूस नीयत से ख़ुदा की तरफ़ क़दम उठाता है ख़ुदा तआला उस की तरफ़ राहनुमाई के वास्ते बढ़ता है। इन्सान का फ़र्ज़ है कि तदब्बुर करे और हक़ तलबी की सच्ची तड़प और प्यास अपने अंदर पैदा करे। मालूमात के वसीअ करने का जो मार्ग अल्लाह तआला ने बताया है उन पर कारबन्द हो। ख़ुदा भी बेनयाज़ हो जाता है उस व्यक्ति से जो ख़ुदा से लापरवाई करता है।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 10 पृष्ठ 284 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "अपने नफ़्स की तबदीली के वास्ते प्रयास करो।" कोशिश करो। "नमाज़ में दुआएं माँगो। सदक़ात ख़ैरात से और दूसरे हर तरह के मार्गों से وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا में शामिल हो जाओ। जिस तरह बीमार चिकित्सक के पास जाता, दवाई खाता, दस्त लाने वाली औषध लेता, ख़ून निकलवाता, टकोर करवाता और शिफ़ा हासिल करने के वास्ते हर तरह की तदबीर करता है इसी तरह अपनी रुहानी बीमारियों को दूर करने के वास्ते हर तरह की कोशिश करो। केवल मुख से नहीं बल्कि मुजाहिदा के जिस क़दर तरीक़ ख़ुदा तआला ने फ़रमाए हैं वे सब बजा लाए (मल् फ़ूज़ात, भाग 8 पृष्ठ 188 ऐडीशन 1984 ई.) अतः यह वे तरीक़ है जिससे अल्लाह तआला के पाने के रास्ते खुलते चले जाते हैं और फिर दुआओं की तरफ़ तवज्जा भी दिलाते हैं।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "इन्सान को चाहिए कि इस ज़िंदगी को इस क़दर बुरा ख़्याल करके इस से निकलने के लिए कोशिश करे।" इस ज़िंदगी को सब कुछ न समझो बल्कि यह दुनिया-दारी जो है उसे आरिज़ी ज़िंदगी और गंदी ज़िंदगी समझो" और दुआ से काम ले क्योंकि जब वेह हक़ तदबीर का अदा करता है और फिर सच्ची दुआओं से काम लेता है तो आख़िर अल्लाह तआला उसको निजात दे देता है और वे गुनाह की ज़िंदगी से निकल आता है क्योंकि दुआ भी कोई मामूली चीज़ नहीं है बल्कि वह भी एक मौत ही है।जब इस मौत को इन्सान क़बूल कर लेता है तो अल्लाह तआला उसको मुजरिमाना ज़िंदगी से जो मौत का मूजिब है बच्चा लेता है और उस को एक पाक ज़िंदगी अता करता है।" फ़रमाया "बहुत से लोग दुआ को एक मामूली चीज़ समझते हैं। अतः याद रखना चाहिए कि दुआ यही नहीं कि मामूली तौर पर नमाज़ पढ़ कर हाथ उठा कर बैठ गए और जो कुछ आया मुँह में से कह दिया। इस दुआ से कोई फ़ायदा नहीं होता क्योंकि यह दुआ केवल एक मंत्र की तरह होती है। न इस में दिल शरीक होता है और न अल्लाह तआला की क़ुदरतों और ताक़तों पर कोई ईमान होता है।

याद रखों दुआ एक मौत है और जैसे मौत के वक़्त-ए-इज़्तिराब और बेकरारी होती है इसी तरह पर दुआ के लिए भी वैसा ही इज़्तिराब और जोश होना ज़रूरी है। इस लिए दुआ के वास्ते पूरा पूरा इज़्तिराब और पीढ़ा जब तक न हो तो बात नहीं बनती। अतः चाहिए कि रातों को उठ उठकर निहायत तज़र्रे और पीढ़ा के साथ ख़ुदा तआला के हुज़ूर अपनी मुश्किलात को पेश करे और इस दुआ को इस हद तक पहुँचावे कि एक मौत की सी सूरत वाक़्य हो जाए। उस वक़्त दुआ क़बूलीयत के दर्जा तक है।"

फ़रमाते हैं कि "यह भी याद रखो कि सबसे अव्वल और ज़रूरी दुआ यह है कि इन्सान अपने आपको गुनाहों से पाक साफ़ करने की दुआ करे। सारी दुआओं का

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

असल और भाग यही दुआ है क्योंकि जब यह दुआ क़बूल हो जाए और इन्सान हर किस्म की गंदगियों और आलूदगियों से पाक साफ़ हो कर ख़ुदा तआला की नज़र में पवित्र हो जाए तो फिर दूसरी दुआएं जो उस की हाजात ज़रुरीया के मुताल्लिक़ हैं "अर्थात इन्सान की दूसरी दुनियावी ज़रूरतों के लिए होती हैं" वे उस को मांगनी भी नहीं पड़तीं वह ख़ुद बख़ुद क़बूल होती चली जाती हैं। बड़ी मशक़्क़त और मेहनत-तलब यही दुआ है कि वे गुनाहों से पाक हो जाएँ।" सबसे बड़ी दुआ यही है कि इन्सान अपने लिए दुआ करे कि वे गुनाहों से पाक हो जाएँ" और ख़ुदा तआला की नज़र में मुत्तक़ी और रास्तबाज़ ठहराया जाए। अर्थात अव्वल अव्वल जो हिजाब इन्सान के दिल पर होते हैं उनका दूर होना ज़रूरी है। जब वे दूर हो गए तो दूसरे हिजाबों के दूर करने के वास्ते इस क़दर मेहनत और परीश्रम करन नहीं पड़ेगी क्योंकि ख़ुदा तआला का फ़ज़ल उसके शामिल-ए-हाल हो कर हज़ारों ख़राबियां ख़ुद बख़ुद दूर होने लगती हैं और जब अंदर पाकीज़गी और तहारत पैदा होती है और अल्लाह तआला से सच्चा ताल्लुक़ पैदा होजाता है तो फिर अल्लाह तआला ख़ुद बख़ुद उसका रक्षक और मुतवल्ली होता है और इससे पहले कि वे अल्लाह तआला से अपनी किसी हाजत को मांगे अल्लाह तआला ख़ुद उसको पूरा कर देता है। यह एक बारीक रहस्य है जो उस वक़्त खुलता है" यह बड़ा बारीक राज़ है और यह राज़ उस वक़्त खुलता है" जब इन्सान इस मुक़ाम पर पहुंचता है। इस से पहले उसकी समझ में आना भी मुश्किल होता है लेकिन यह एक अज़ीमुश्शान मुजाहिदा का काम है क्योंकि दुआ भी एक मुजाहिदा को चाहती है। जो व्यक्ति दुआ से लापरवाई करता है और इस से दूर रहता है अल्लाह तआला भी इस की पर्वा नहीं करता और उस से दूर हो जाता है। जल्दी और उतावलापन यहां काम नहीं देता। ख़ुदा तआला अपने फ़ज़ल से जो चाहे अता करे और जब चाहे प्रदान फ़रमाए। सायल का काम नहीं है कि वे तुरंत अता न किए जाने पर शिकायत करे और बुरे विचार करे बल्कि इस्तिक़लाल और सब्र से मांगता चला जाए।" (मल् फ़ूज़ात, भाग 6 पृष्ठ 406 - 407 एडीशन 1984 ई.)

अल्लाह तआला हमें इन बातों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और इस रमज़ान को हमारे लिए अल्लाह तआला से पुख़्ता ताल्लुक़ जोड़ने वाला बना दे। उसकी बातों पर अमल करने वाला बना दे। इस पर कामिल ईमान लाने वाला बना दे। क़ुबूलियत-ए-दुआ के नज़्ज़ारे हमें देखने वाला बना दे और यह हालत हमेशा क़ायम रहने वाली हो। रमज़ान में भी और रमज़ान के बाद भी हम अल्लाह तआला का ख़ालिस अबद बनने का किरदार अदा करने वाले हों। अल्लाह तआला हमें अपने ऐसे रास्ते दिखाए जिनसे हम कभी भटकने वाले न हों और हमेशा उसकी प्यार की नज़र हम पर पड़ती रहे। हम ज़माने के इमाम की बैअत का हक़ अदा करने वाले हों। अल्लाह तआला के इस इनाम को पा कर कभी इस से वंचित रहने वाले न बनें जो अल्लाह तआला ने हमें ज़माने के इमाम को मानने का यह इनाम दिया है। अल्लाह तआला हमारे मुख़ालेफ़ीन और दुश्मनों के छल से हमेशा हमें महफ़ूज़ रखे। हमारी दुआओं को क़बूल फ़रमाते हुए दुश्मनों के छल उन पर उलटाए। जमाअत की तरक़्क़ी के सामान हमेशा पैदा फ़रमाता रहे। अतः इस रमज़ान को अपनी मक़बूल दुआओं का माध्यम बना लें। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

दुनिया के हालात के लिए भी दुआएं करें। अल्लाह तआला दुनिया को तबाह कारियों से बचाए और उनको अक़्ल दे कि ये अपने पैदा करने वाले ख़ुदा को पहचानने वाले हों।

नमाज़-ए-जुमा के बाद ऐम. टी. ए. की एक साईट का भी इजरा करूँगा जो एम.टी. ए इंटरनैशनल ने वेबसाइट बनाई है। इस की मोबाइल एप्लीकेशन बनाई है जिस में तीन सौ तेराह बदरी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के विषय में मेरे ख़ुतबात जुमा को एक जगह जमा किया गया है। इस वेबसाइट पर अहबाब यह ख़ुतबात जुमा देखने के साथ साथ बदरी सहाबा के विषय में बनाई गई प्रोफ़ाईल्ज़ पढ़ सकते हैं और जहां तक किसी ने मुशाहिदा और अध्यन किया हुआ होगा उस को बुकमार्क (book mark) भी कर सकते हैं। इस के इलावा हर सहाबी के विषय में प्रश्न उत्तर का एक कुईज़ मौजूद है। वेबसाइट पर सम्बन्धित मुफ़ीद नक़्शे भी देखे जा सकते हैं। नामों और मुश्किल शब्दों का अरबी उच्चारणभी सुना जा सकता है। अब तक की अपलोड की गई मालूमात के इलावा आइन्दा आने वाली नई मालूमात और वीडीयोज़ भी हर हफ़्ते इस में जारी की जाएँगी। वेबसाइट का जो पता है वह यह है

www. 313companions. org जैसा कि मैंने कहा कि नमाज़ के बाद इस का इजरा होगा। अल्लाह तआला इसको भी लोगों के लिए फ़ायदे का माध्यम बनाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 3 का शेष

फैले जो मेरा शहर है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हम बड़े शौक़ से यहां के रहने वालों को बताते हैं कि हमने इस मस्जिद का नाम "मस्जिद मर्यम" रखा है क्योंकि लोग हज़रत मर्यम का बड़ा सत्कार करते हैं। हम उन्हें कहते हैं कि हज़रत मर्यम तुम्हें भी प्यारी हैं कि वह हज़रत-ए-ईसा की माता हैं परन्तु केवल हज़रत-ए-ईसा की माँ होने के कारण से हमें प्यारी नहीं हैं बल्कि अल्लाह तआला ने उनकी नेकी और तक़्वा के मयार को भी देखकर उन पर प्यार की नज़र डाली और मौमिनों को कहा कि तुम मर्यम जैसी विशेषताएं पैदा करो। मर्यम ने अपनी नामूस की हिफ़ाज़त की और यह हिफ़ाज़त ख़ुदा तआला की मुहब्बत और भय के कारण से की। वह ख़ुदा तआला की कामिल फ़रमांबर्दार थीं और इसके आदेशों पर अनुकरण करने वाली थीं। वह रास्तबाज़ और सच्चाई पर क़ायम रहने वाली थीं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अतः अल्लाह तआला ने प्रत्येक हक़ीक़ी मुस्लमान पुरुष और महिला को इन मोमिनों वाली सिफ़ात को अपनाने का आदेश दिया है। मियन इन अहमदी लड़कियों और महिलाओं को भी यही कहूँगा कि यदि यहां के लोग हज़रत मर्यम की इज़्ज़त करते हैं और केवल इज़्ज़त ही करते हैं और उन सिफ़ात को अपनाने की प्रयास नहीं करते जो उनमें थीं तो यह उनकी कमज़ोरी है। एक हक़ीक़ी मुस्लमान पुरुष और महिला को तो हज़रत मर्यम की तरह अल्लाह तआला का हक़ीक़ी फ़रमांबर्दार होते हुए अल्लाह तआला के आदेशों पर चलने का प्रयास करन चाहिए और उन आदेशों में से लज्जा और पर्दा भी एक आदेश है जिसका क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला ने वर्णन किया है। अतः अल्लाह तआला की इबादत के साथ अपने हयादार कपड़ों का भी ध्यान रखना चाहिए। अल्लाह तआला सबको अपनी रज़ा के अनुसार जीवनियाँ गुज़ारने और हक़ीक़ी मोमिन बनने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। दुनिया में डूबने की बजाय इबादतों का हक़ अदा करने वाला बनाए। एक दूसरे के हुक़ूक़ की अदायगी करने वाला बनाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद मर्यम के कवायफ़ वर्णन करते हुए फ़रमाया :

मैंने सितम्बर 2010 ई. में इस मस्जिद की बुनियाद रखी थी। इस ज़मीन का कुल रकबा 2400 मुरब्बा मीटर है जोकि लगभग पोने पौने एकड़ पोना से थोड़ा कम बनता है। मस्जिद का छतवाला हिस्सा 217 मुरब्बा मीटर है और ये जगह 2009 ई. में पाँच लाख पंद्रह हज़ार यूरो की लागत से ख़रीदी गई थी। इस में एक मकान भी था बना हुआ। फिर उस के बनने पर तलगभग ग्यारह लाख यूरो के अख़राजात आए हैं। मैन हाल और दूसरी जगहों को मिला कर इस में लगभग दो सौ के क़रीब लोग नमाज़ पढ़ सकते हैं। इस मस्जिद से जुड़े दो दफ़ातिर भी हैं। जैसा कि मैंने बताया कि एक मकान भी था जो तीन कमरों पर आधारित है और इस में किचन इत्यादि भी बना हुआ है। 17 गाड़ियों की पार्किंग की गुंजाइश है। फिर मस्जिद की लोकेशन बड़ी अच्छी है। यहां क़रीब ही रेसिंग ग्रांऊड है जहां घोड़दौड़ होती है। वहां से ये मस्जिद बड़ी अच्छी तरह नज़र आती है। इस जगह प्रसिद्ध त्योहार होता है और प्रसिद्ध व्यक्तित्व भी इस घोड़ों की दौड़ को देखने के लिए आते हैं और वहां से मस्जिद का नज़ारा भी बड़ा सुन्दर है। लगभग चालीस हज़ार लोग शामिल होते हैं। तो इस दृष्टि से भी मस्जिद का परिचय बढ़ेगा क्योंकि बाहर से भी लोग यहां आएँगे और यह पर्याप्त आबाद क्षेत्र है। यहां से लगभग प्रतिदिन ही सैंकड़ों की संख्या में लोग गुज़रते हैं। यहां क़रीब ही स्टूडैंट की रहने के स्थान भी हैं। गालवे एयरपोर्ट भी दस मिनट के दूरियां है।

अब बाद में दो और मकान भी ख़रीदे गए हैं जो मस्जिद की दीवार के साथ लगते हैं और उनकी भी अच्छी अकामोडेशन है। बहर हाल ये जो सारा कम्पलैक्स है

अल्लाह तआला प्रत्येक दृष्टि से बाबरकत फ़रमाए और यहां के लोगों को इस मस्जिद का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ख़ुतबा जुमा का मुकम्मल मतन हमेशा की तरह अलग अलग प्रकाशित होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह ख़ुतबा जुमा दो बजे तक जारी रहा। इस ख़ुतबा जुमा का अंग्रेज़ी और बंगला भाषा में रवां अनुवाद आयरलैंड से सीधा प्रसारित हुआ जबकि जर्मन अनुवाद जर्मनी से बराह-ए-रस्त प्रसारित हुआ। ख़ुतबा जुमा के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़-ए-जुमा के साथ नमाज़-ए-अस्र जमा करके पढ़ाई । नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वापस होटल Clayton पधारे। मीडिया के नुमाइंदगान का

हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से इंटरव्यू

हुज़ूर अनवर की होटल में आमद से पूर्व ही नैशनल रेडीयो RTE One का नुमाइंदा Mike Mc Carthyo और आयरलैंड की नैशनल अख़बार The Irish Times की जर्नलिस्ट महिला Lorna Siggins हुज़ूर अनवर का इंटरव्यू लेने के लिए होटल पहुंचे हुए थे।

सबसे पहले नैशनल रेडीयो RTE One के प्रतिनिधि ने हुज़ूर अनवर का इंटरव्यू लिया।

प्रतिनिधि ने पहला प्रश्न यह किया कि अभी ख़ुतबा जुमा में आपने इस्लाम के बारी में बताया है और कहा है कि आप शांति प्रिय हैं। आप का नारा मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं है। तो जो कुछ मुस्लमान संसार में हो रहा है इस से आप चिंता में या परेशान हैं।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया।

इस्लाम तो सिखाता है कि तुम किसी के हुक़ूक़ न दबाए। किसी की हक़तलफ़ी न करो और किसी पर ज़्यादती न करो। हम तो इस्लाम की असली और हक़ीक़ी शिक्षा पर कार्यरत हैं और हमारा जो माटो है कि मुहब्बत सबसे और नफ़रत किसी से नहीं इस की बुनियाद भी इस्लाम की शिक्षाओं पर ही हैं। इस्लाम कहता है कि ख़ुदा एक है और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के रसूल हैं। जब हम ये कहते हैं कि एक ख़ुदा है तो इस का अर्थ है कि वह ख़ुदा सब क़ारिब है और सबको पालने वाला है। और क़ुरआन-ए-करीम कहता है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह अल्लासल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रहमतुल लिलआलमीन हैं और जब आप सारी संसार के लिए, सारे आलम के लिए रहमत हैं तो फिर ये किस तरह हो सकता है कि कोई मुस्लमान भी किसी दूसरे पर अत्याचार और ज़्यादती करे और उसके हुक़ूक़ दबाए।

प्रतिनिधि ने दूसरा प्रश्न किया कि क्या आपको इस बात का अफ़सोस होता है कि संसार में इस्लाम के वर्णन पर ख़ुदा और इस्लामी शिक्षाओं की बात नहीं होती बल्कि सीरिया के मौजूदा हालात के बारे में ही प्रश्न उठाया जाता है? इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हाँ मुझे अफ़सोस होता है और इस समय भी अफ़सोस हुआ था जब अलक़ायदा और तालिबान की तंज़ीमें अस्तित्व में आई थीं। अतः जब भी कोई मुस्लमान इस्लाम के नाम पर और अल्लाह तआला के नाम पर इस किस्म की ज़्यादती करता है तो तब मुझे भी बिल्कुल इसी तरह अफ़सोस होता है जैसे आप लोगों को है।

प्रतिनिधि ने एक प्रश्न यह किया कि यहां की कम्यूनिटी के लिए आपका संदेश किया है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मैं अपने ख़ुतबा जुमा में बता चुका हूँ कि इस्लाम की सही और हक़ीक़ी शिक्षा दूसरों तक पहुँचाओ। मैंने उन्हें हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूकु ईबाद की अदायगी के बारे में बताया है कि यदि आप लोग इन हुक़ूक़ की अदायगी करने वाले होंगे तो फिर किसी किस्म का उपद्रव नहीं होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मेरा संदेश यह है कि संसार में प्रत्येक ओर ही फ़साद है। केवल मुस्लमान देश Involve नहीं हैं बल्कि कुछ दूसरे देशों में भी यह फ़साद उपस्थित है। इस्टर्न यूरोप के देशों में भी है और समस्त संसार इस फ़साद की लपेट में आ सकता है। अतः मेरा संदेश यही हैकि सब्र-ओ-तहम्मुल का प्रकट करें। एक दूसरे को समझें। आपस में एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करें और अमन और आपसी प्रेम का बनाएं। अन्यथा संसार में एक महान तबाही आएगी जिसको क़ाबू करना असम्भव हो जाएगा। और ये तबाही तीसरी जंग अज़ीम की सूरत में प्रकट होगी।

इसके बाद आयरलैंड के नैशनल अख़बार The Irish Times के प्रतिनिधि जर्नलिस्ट Lorna Siggins ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से इंटरव्यू लिया।

प्रश्न : जर्नलिस्ट ने प्रश्न किया कि हमें दो किस्म का इस्लाम नज़र आ रहा है । एक रिपोर्ट के अनुसार तीन हज़ार के क़रीब मुस्लमान जिहाद के लिए सीरिया इत्यादि गए हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि : इन लोगों को ग़लत तरीक़ पर गाईड किया गया है। ये Frustrated हैं और हालात से तंग आए हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि एक समय ऐसा आएगा कि इस्लाम का केवल नाम बाक़ी रह जाएगा। लोग नाम के मुस्लमान होंगे। मस्जिदें देखने में आबाद तो होंगी परन्तु हिदायत से ख़ाली होंगी तो उस समय ख़ुदा तआला एक रीफ़ारमर भेजेगा जो मसीह और महदी होगा और इस्लाम की असली और हक़ीक़ी शिक्षा को ज़िंदा करेगा और इस्लाम का संदेश संसार को पहुंचाएगा। और वह मुस्लमानों को भी और दूसरों को भी एक ही दीन पर जमा करेगा

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब यह भविष्यवाणी फ़रमाई तो इस आने वाले मसीह और महदी की सदाक़त के लिए निशानात भी निर्धारित फ़रमाए। इन निशानात में से एक निशान यह था कि सूरज और चांद को रमज़ान के महीना में विशेष दिनों में और मुक़र्ररा तारीख़ों में ग्रहण लगेगा इस लिए ये ग्रहण 1894 में लगा जो संसार के पूर्व की ओर हिस्सा ने देखा। फिर अगले साल 1895 ई. में संसार के पश्चिमी हिस्सा में लगा। ये आपकी सदाक़त का और ख़ुदा की ओर से होने का एक बहुत बड़ा निशान था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अतः यदि इन झगड़ों और मसायब से बचना है तो मुस्लमान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार करें। यदि मुस्लमान स्वीकार कर लें तो बच सकते हैं अन्यथा ये लोग ज़ाए हो जाऐंगे

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हम अहमदी इस्लाम की सच्ची और वास्तविक शिक्षाओं पर अनुकरण कर रहे हैं और प्रत्येक वर्ष लाखों लोग अहमदियत में दाख़िल हो रहे हैं।

जर्नलिस्ट के इस प्रश्न पर कि क्या आप लोग ग़ैर मुस्लिमों को भी मस्जिद में इबादत करने देंगे

इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

हमारी मस्जिदें सब के लिए खुली हैं। सब दूसरे धर्मों के लिए खुली हैं। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दूसरे धर्मों के लिए मस्जिदें खोली हैं तो मैं किस तरह साहस कर सकता हूँ कि दूसरे धर्मों वालों को आने से रोकूँ। अतः यह मस्जिद प्रत्येक धर्म वाले के लिए खुली है और हमेशा खुली रहेगी।

जर्नलिस्ट ने एक प्रश्न यह किया कि आज रात के ऐडरैस में आपका क्या संदेश होगा।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हमारा आज भी अमन का वही संदेश है जो हम पहले से पूरी संसार में दे रहे हैं और हमारा संदेश संसार के समस्त किनारों तक पहुंच चुका है अब गालवे, आयरलैंड संसार का किनारा है यहां भी संदेश पहुंच चुका है और यहां से संसार के किनारों तक पहुंच रहा है।

जर्नलिस्ट ने कहा कि गालवे तो आयरलैंड का केंद्र है। सैंटर में है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हम सैंटर से किनारों तक और किनारों से सैंटर तक अमन-ओ-सलामती का संदेश पहुंचा रहे हैं

ये दोनों इंटरव्यू लगभग पंद्रह मिनट तक जारी रहे। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने अपार्टमंट में तशरीफ़ ले गए

(उद्धरित अख़बार बदर उर्दू 16-23 अक्तूबर 2014)

26 सितम्बर 2014 शुक्रवार (शेष रिपोर्ट आगे)

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 12 May 2022 Issue No.19

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

पृष्ठ 5 का शेष

को कुछ नहीं पता। तो ये चीज़ें उन लोगों को पता होनी चाहिऐं। इस लिहाज़ से भी आप plan करें।

प्रश्न : इस मुलाक़ात में इस प्रश्न पर कि कौरोना वायरस की वजह से दुनिया की मौजूदा सूरत-ए-हाल में तब्लीग़ का काम किस तरह किया जाए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने फ़रमाया :

उत्तर : जो ऑनलाइन तब्लीग़ है वह बहुत ज़्यादा शुरू हो गई है, वाट्स एप्प पर, सोशल मीडीया पर। यहां देखें कि लोगों के पास क्या-क्या प्रश्न हैं? क्या-क्या issues उठते हैं ?अलग साईटस हैं, उनमें जा कर उनको बताएं कि इन हालात में हमें अल्लाह तआला की तरफ़ ज़्यादा झुकना चाहिए, अल्लाह तआला की तरफ़ आना चाहिए, उसको पहचानना चाहिए। न यह कि atheist बन जाएं और ख़ुदा तआला को छोड़ दें। या यह समझें कि ख़ुदा तआला दुआएं क़बूल नहीं करता या ख़ुदा तआला नहीं है या दुनिया ही सब कुछ है। यदि दुनिया को बचाना है तो यह करो। क्योंकि इसके बाद फिर जो crisis आएगा, इस बीमारी के बाद दुनिया की economy जब shatter होती जाएगी तो अगला crisis फिर ये आएगा कि फिर एक दूसरे के माल पर क़बज़ा करने की कोशिश करेंगे और जब माल पर क़बज़ा करने की कोशिश करेंगे तो जंगें शुरू हो जाएँगी, जिस के लिए बलॉक बनते हैं और बलॉक बनने शुरू हो चुके हैं। तो इस से बचने के लिए यही तरीक़ा है कि ख़ुदा की तरफ़ आओ और अपनी ज़िम्मेदारियों को समझो। लेकिन जो भी मीडीया है, आख़िर लोगों का दुनिया से राबिता हो ही रहा हैं नां? इस मीडीया को आप भी इस्तिमाल करें, और इस तरीक़ को आप भी इस्तिमाल करें जो दुनिया इस्तिमाल कर रही है।

मेरा ख़्याल है कि आज जो बातें हो गई हैं उन्ही पर काम कर लें, और जो कुछ ज़रूरी बातें थीं वे मैंने कह दी हैं कि इन(नैशनल आमला) की ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं और जो नैशनल आमला से मैं बातें कर रहा हूँ तो जो अलग अलग मजालिस हैं उनके सम्बन्धित सचिवों जो हैं, उन के लिए भी यही बातें हैं, उनको भी यह याद रखनी चाहिएं और इसके अनुसार अपनी policy बनानी चाहिए और अमल करवाना चाहिए। यदि grassroots level पर सारे काम होने शुरू हो जाएं, आपकी मजालिस के हर विभाग के जो सम्बन्धित सचिवों हैं वे अपना अपना काम करें, ज़िम्मेदारी को समझें तो नैशनल आमिला का भी काम आसान हो जाता है और इस उद्देश्य को भी आप पूरा करने वाले बन जाते हैं जिस के लिए आपको ओहदेदार बनाया गया है और इस तरह आप ख़लीफ़-ए-वक़्त के सहायक भी बन जाते हैं और जमाअत की ख़िदमत का जो काम है इस को भी सही तरह सरअंजाम देते हैं और अल्लाह तआला की निगाह में भी फिर आपकी ख़िदमत जो है वह मक़बूल होती है। लेकिन यदि केवल ओहदा रखना है और ओहदा रख के फिर काम नहीं करना और अपने ग़लत नमूने क़ायम करने हैं, दुआओं की तरफ़ तवज्जा नहीं देनी, आपस में विभागों में सहयोग नहीं करना, मर्कज़ी विभागों में और ज़ेली तन्ज़ीमों के विभागों में तआवुन नहीं होना तो ऐसे ओहदों का कोई फ़ायदा नहीं, ऐसी तंज़ीम का कोई फ़ायदा नहीं। और यह आप लोग मुझे तो धोखा दे सकते हैं, या निज़ाम जमाअत को धोखा दे सकते हैं लेकिन ख़ुदा तआला को धोखा नहीं दिया जा सकता। इसलिए हमेशा याद रखें, हर काम करते हुए, हर वक़्त याद रखें कि ख़ुदा तआला हमारे हर क़ौल और फ़ेअल को देखता और सुनता है। इसलिए हमने अल्लाह तआला की ख़ातिर हर काम करना है और इसके लिए अपनी समस्त सलाहीयतें, समस्त potentials को इस्तिमाल में लाना है ताकि हम जमाअत के सही फ़आल रुकन भी बन सकें और जमाअत की सही रंग में ख़िदमत भी कर सकें। अल्लाह तआला आपका हाफ़िज़-ओ-नासिर हो।

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी ऐस लंदन (धन्यवाद सहित अख़बार अलफ़ज़्ल इंटरनैशनल 12 मार्च 2021)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

पृष्ठ01 का शेष

क़ुरआन-ए-करीम ने शुरू से ही औरतों की इज़्ज़त को क़ायम किया है और उनके हक़ को स्वीकार किया है परन्तु बावजूद इसके अब तक यह कहा जाता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने औरतों पर अत्याचार किया भला वह कौन सी किताब है जिस में आरंभ ही से औरत के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त और निगहदाशत की गई हो। वह केवल और केवल क़ुरआन-ए-मजीद ही है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 185 मुद्रित 2010 क़ादियान)

तसहीह (सुधार)

अख़बार बदर 31 मार्च 2022 ई. अंक नंबर 13 में ख़ुतबा जुमा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़र्मूदा 25 फ़रवरी 2022 ई. प्रकाशित हुआ है। इस अंक के पृष्ठ 5 कालम 2 में निमंलिखित इबारत प्रकाशित हुई है :

"وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ
انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ
وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۔ يَاۤيُّهَا النَّاسُ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا فَاِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ وَ
مَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ۔"

सही इबारत इस तरह है

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ
انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ۔ يَاۤيُّهَا النَّاسُ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ
مُحَمَّدًا فَاِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ وَمَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ۔

बदर के पाठक दुरुस्ती कर लें। (विभाग)

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad